PYAASI AANKIYAN

BY CHANDRA PRABHAKAR

INDEX

1. मन भज ले तू हरि का नाम। 1

2. कितने रूप धरो गोबिन्दा। 1

3. पीड़ा कितनी दर्द यहाँ पर। 2

4. चाह मुक्ति की रखे मुक्ति ना। 2

5. नयनों से नीर गिरें झर झर। 3

6. कितने भटके ईश जगत में। 3

7. अपनी शरण में राख हरि तू। 4

8. नयना मेरे नीर गिरायें। 4

9. रोते जीवन में रंग भर दो। 5

10. वह नहीं कहते हम जपें हैं। 5

11. बह रहे हैं नीर श्यामा। 6

12. हे राम राम हे राम राम। 6

13. गिरते आंसू बूझे न बात। 7

14. पुष्प सूखे नीर नयना। 7

15. किसका सहारा ले यहाँ। 8

16. बिन हरि कृपा नहीं कुछ होई। 8

17. जी नहीं लगता यहाँ पर। 9

18. जानते कुछ भी नहीं। 9

19. पंख भीगे उड़ न पाये। 10

20. राम जपे बिन चैन न आवे। 10

21. ईश चरणों में बिठा लो। 11

22. राम रामा राम रामा। 11

23. सुख को खोजें उसे न पावे। 12

24. ईश कृपा करना तुम हम पर। 12

25. नीर मेरे गिर रहे है। 1327. न मिलो मर्जी तेरी है। 14

28. मुझको हरि तुम नाहिं विसारो। 14

29. मैं हरि आयो शरण तिहारी। 15

30. पल पल यह परिवर्तित जीवन। 15

31. मन भूल जा मन भूल जा। 16

32. तेरी दया बिन चल न पाऊँ। 16

33. हरि तुम राखो लाज हमारी। 17

34. तुम हरि राखो लाज हमारी। 17

35. बता कहाँ मैं तुमको पाऊँ। 18

36. पी बिन प्यासा भटक रहा मन। 18

37. सकल जगत का तू मालिक। 19

38. कितने छूटे कूल यहाँ पर। 19

39. चाहतें सब हो विसर्जित। 20

40. जाने बाला कुछ ना पूछे। 20

41. जायेगी कट जिन्दगी यह। 21

42. कुछ ना पूछा उसने मुझसे। 21

43. अपने आंसू किसे दिखायें। 22

44. नहीं सुनोगे तेरी मर्जी। 22

45. बहे नीर जब उसे पुकारो। 23

46. छोड़ सब जाते यहाँ पर। 24

47. मिलें छांव पावन हो यह मन। 24

48. नहीं मिले हमें किनारा। 25

49. समझ सके नहीं तेरे इंगित। 25

50. चरण पड़ा मैं चरण न दीखे। 2651. तेरे द्वारे न्नाथ पड़ा हूँ। 26

52. तू मन शिकायत नही करें। 27

53. प्रभु तुम ही नाथ हमारे हो। 27

54. बनता तू है क्यो खामोश। 28

55. प्रभु मेरे दिल में आओ। 28

56. कैसे समझाऊँ यह मनुआ। 29

57. नयनन हरि छवि बसा बाबरे। 29

58. कितने छूटे कूल यहाँ पर। 30

59. बिन हरि भजन समझ नहिं आवे। 30

60. लहराये सागर लहराता। 31

61. जिसने प्रीति लगाई हरि से। 31

62. बोल न पाये पागल यह मन। 32

63. यह नीर गिरे तुझ चरणो में। 32

64. अपने बल नहीं चल सके हम। 33

65. प्रभु जी सुनो विनती हमारी। 33

66. बीते जनम नहीं मैं समझा। 34

67. तुम्हारे द्वार पर बैठे। 34

68. प्रभु दुख भंजक जग के पालक। 35

69. सबकी अपनी दौड़ यहाँ है। 35

70. चाहा जब उसने प्यार किया। 36

71. तुझ ओर निहारें आंखे अब। 36

72. हरि जप हरि जप हरि जप हरि जप। 37

73. मेरी नौका पार लगा दे। 37

74. कुछ समय की रात बाकी। 38

75. पगले निज मन ना समझाये। 38

76. तुमसे विनती नाथ करूँ मैं। 3977. जगपालक प्रभु दुख के नाशक। 39

78. पिय बिन बता हंसे कैसे हम। 40

79. सुपने बसन्त के नयनों में। 40

80. जगपालक वह दुख का नाशक। 41

81. जाये प्रतिपल रूदन बिखरता। 41

82. जीवन सारा बीता जाता। 42

83. बसो हृदय मेरे तुम स्वामी। 42

84. तुम करो वह ठीक होगा। 43

85. दिल तो नहीं लगता यहा। 43

86. तुझ कृपा से चल रहे हम। 44

87. मन जिसको सुन कर तू रीझे। 45

88. चुप तुम रहो ना। 45

89. मुझे अपनी शरण में लो। 46

90. सुर उठा सके ना हम। 46

91. अंखियाँ गिरायें आंसू। 47

92. उठे कैसे गीत तुम्हारे। 47

93. किसे सुनायें हम यहाँ। 48

94. जीत होगी हार होगी। 48

95. तू ना आये राम पुकारूँ। 49

96. कौन सुनता है किसी की। 49

97. अपने दामन को प्रभु दे दे। 50

98. गलत सही कुछ जान न पाये। 50

99. थक गये हम चलते चलते। 51

100. हरि हरि जपो न भूलो मनुआ। 51

101. तुमको हरि मैं कैसे पाऊँ। 52

102 करूँ मैं अर्चना तेरी। 52

1

मन भज ले तू हरी नाम, जान सुख का धाम। स्वार्थ से सब मिले यहाँ, उसमें है विश्राम। लोग कहें पागल तुमको, रख न उनसे काम। यह सुपना बीता जाता, कर भरोसा राम।

टूट रही सारी कड़ियाँ, ठाँव है बस राम। दुख में आवे याद वही, भूलो न मन राम। बहते नीर खोजते जब, जिय पुकारे राम। सूखे धारा वह बरसता, मेघ बन कर राम।

चलता चल जप लो उसको, वह संभाले राम।

देखो क्या बस में तेरे, वह रखैया राम।

प्यार चाहे राम का मन, ज्ञान दे वह राम।

नौका पार करेगा यह, वही खेवट राम।

2

कितने रूप धारो गोबिन्दा, नाच नचावे प्यासा जिवड़ा।

चला जा रहा रूके न रेला, अश्रु आँख में दिल में पीड़ा। अँखियाँ रोवे तुझे पुकारें, छिप-छिप कर तू खेल खिलावे। बेदर्दी बनो नहीं छलिया, क्यों रूलावे सहा न जावे।

यह अनन्त पथ राह न जाने, कैसे इस दिल को समझावे। बिना कृपा न पार हो नदिया, चरण पड़े हम तुझे मनावे। करो नाथ मग में उजियारा, दुख से हो जाये छुटकारा। सकल सृष्टि का तू है स्वामी, लखो नीर मैं प्रभु जी हारा।

बंशी बजैया रास रचैया, चाह रहूँ तेरी मैं छैंया।

मेरे सर्जक मुझे न भूलो, थामों प्रभु जी मेरी बहियाँ।

*सकल सि) है तेरी चेरी, आँख न ेरो कर ना केरी। जितना चाहे नाच नचावे, तुझी प्यार में भीगूँ सारी।*3

पीड़ा कितनी दर्द यहाँ पर, मन इतना बेचैन यहाँ है।

बिन हरि सुमरे न कल्याणा, मानो मनुआ यही ठिंका है।

प्यार प्यास ले जग में घूमें, अंखियाँ यह पल पल में बरसे। सुमरे हरि को प्रीति बढ़े जब, बरसे जल तब जियरा हरषे।

लहरे उठती गिरती कितनी, इसी शून्य में खो जाती है।

बिन हरि जपे न प्यास मिटे यह, संधया भी ढलती जाती है। आये क्यों ना राह जानते, हरि को रो रो कर पुकार ले।

वह दिखलायेगा पथ तुमको, शिशु की तो बस माँ ही सुधि ले।

गिर गिर कर चल हरि संभाले, दिल में उसकी ज्योति जला ले। खेव हारा बस वह ही है, उसकी ही तू बांह पकड़ ले।

आँसू बहे न कोई देखे, यह सब हैं कर्मों के लेखे।

निज को करो समर्पित उसके, वही मिटायेगा सब धोखे।

हरि हरि भज ले राम सुमर ले, यह मेला तो दो दिन का है। क्यों होता बैचेन बाबरा, यह मिट जाना सब खेला है।

हरि भज ले जग दन्श मिटें सब, टूटे सुपने प्यार जगे तब। मैं की हरपल होली जलती, सुखदायक वह याद करो रब।

4

चाह मुक्ति की रखे मुक्ति ना, जो बहे मुक्ति हो जाती है। कितना दौड़ कहाँ जायेगा, उसके बिन शान्ति न मिलती है। अन्तस डूब छिपा वस वह ही, हर कदम संभाले है वह ही। बिन विश्वास न शान्ति पावे, लगे सदा डूबे जल माही।

हरि को भक्ति बहे है धारा, जो सुमरे ले जाती पारा। हरि के चरण पड़े जो प्राणी, जाने वह ही सृजन हारा। उसकी मर्जी से है आना, रजा उसी की हमको जाना। करे समर्पित स्वयं हरी को, जाने अपना बस है कुछ ना।

*प्यास भूख हम लिये भटकते, आशाओं के महल संजोते। हरि की ज्योति न घट जलती हो, जग के दुख पल पल में डसते। मेला यह दो दिन का प्यारे, हरि से प्रीति बढ़ा बढ़ता जा। उसकी मर्जी समझ मुक्ति पा, प्यार बढ़ाते उसके घर जा।*5

नयनों से नीर गिरे झर झर, तुम आये ना मोहन जीवन। चरणों की रज मैं पा न सका, मुरझाया जाता है उपवन। मफ करो हमको हारे हम, चरणों में सिर रख रोने दो। जग पालक हे सृष्टि रचैया, मुझको तुम अपना सम्बल दो।

गीत यहाँ कितने ही गाये, इस जंगल में तुमको खोजूं। उड़ा उड़ा सा जाता है मन, कैसे तुमको पाती भेजूँ? तुम करूणा सागर कहलाते, पार लगा दे नैया को अब। इस मेले में भटक रहे हम, बइयाँ मेरी थामो अब रब।

जी मेरा भर भर आता है, कुछ भी अच्छा ना लगता है। पूछ रहे तुमसे देखो ना, जीवन साँसे क्यों लेता है। हरि नाम सहारा हारे को, चाहें डुबा करो तुम पारा। चलते चलते गिरे कहीं पर, भूलें ना तुमको आधारा।

6

कितने भटके ईश जगत में, अपनी शरण में ले लो राम। अँखिया नीर बहाती मेरी, अज्ञानी हूँ जान लो राम। आँख न ेरो मेरे खेवट, ज्ञान सिन्धु तुम जग के पालक। रो रोकर यह प्राण पुकारे, बसों नयन में तेरा सेवक।

नित करता तू सृजन यहाँ पर, विगत यहाँ मिटता जाता। ना रोती धारती ले आंसू, क्यों निष्ठुर सुख का दाता। प्रभु तेरी ही करें अर्चना, तुझमें भीगें प्राण यह राम। यह अनजान डगर है मेरी, प्यार तुम्हारा चाहूँ राम।

इस जगत का तू ही सहारा, नहीं दिखे कोई किनारा। पल पल रंग बदले यह दुनिया, बसो हिय शाश्वत आधारा। नयनन में मेरे बस जाओ, बुझता दीपक तुम्ही जलाओ। अबल हम हैं जगत के स्वामी, अपनी करूणा को दर्शाओ।

7

अपनी शरण में राख हरि तू, बहते आंसू को लख ले। शरण तेरी पर जानूँ न मैं, दन्श हमारा तू हर ले। नौका मेरी बही जा रही, नही किनारा यह जाने। नाम तेरा है हरदम जपते, चाह यही तू पहचाने।

निर्मोही छलिया कहलावे, क्या लोगे छल कर मुझसे। अबल खड़े तुझ ओर निहारे, आँसू हैं मेरे ढरके। सकल सृष्टि नाचे तुझ सम्मुख, घट घट बसे मुरारी तुम। फिर भी भटकूँ हुआ बाबला, करो कृपा गिरधारी तुम।

जीवन छोटा हमें देख ले, सुपने बहुत सुहाने हैं। मृगमरीचिका में हंस हंस कर, तन मन सब ही घायल है। तेरे मन्दिर की चौखठ पर, सदा रहें बैठे हम प्रभु। मेरे नैनन में बस जाओ, करूँ प्रतीक्षा तेरी प्रभु।

8

नयना मेरे नीर गिरायें, अपनी शरणा हरि तुम ले लो। लिये प्यार तुम्हारा झूंमू, प्रभु दन्श हमारे तुम हर लो। अनजाना पथ दिशा न जाने, तुमको मेरे प्राण पुकारें। अंसुवन से भीगी है पलकें, मानूँ तुमको ईश सहारे।

मेरे खेवट तुम आ जाओ, नैया मेरी पार लगाओ। उठे विरह के गीत मुरारी, वन्शी की धुन हमें सुनाओ। चरण पड़ता दास तुम्हारा, तू ही मेरा सृजनहारा। उड़ उड़ जाये मेरा जियरा, बन ना प्रभु तू मुझसे खारा।

कृपा हमे तू दे दे स्वामी, ना होगी तेरी बदनामी। बालक तेरा जान माफ कर, मेरे ईश्वर अन्तर्यामी। अंखिया हरपल बाट निहारें, हमें न भूलो अपना लो तुम। शूल मिटें इस जग के सारे, तुम्ही नजर आओ न हों हम।9

रोते जीवन में रंग भर दो, हार गये हम नाथ संभालो। मात पिता सर्जक तुम मेरे, तड़ रहे भटकन को हर लो। कितने रंग बिखेरे जग में, बिना कृपा यह रोवें नगमें। आँसू की बरसात हो रही, डर डर जाऊँ जियरा सहमें।

जनम जनम की प्यास मिटा दो, अपना मुझको दास बनालो। बसे रहो मेरे नैनन में, विनती मेरी प्रभु जी सुन लो। सुख दुख है जीवन का खेला, बिछुड़ा जाता है सब मेला। प्रीति लगे तुझमें रम जाऊँ, सकल सृष्टि के स्वामी छैला।

यह ब्रह्माण्ड नाचता सारा, नहिं विवेक है मैं तो हारा। इतना ही बस समझ रहा हूँ, सुरति लगे पथ कटता सारा। प्राण पुकारें तुमको प्रियतम, जहाँ ले चलो करें नहीं गम। ऐसा साहस प्रभु दे दो, तुम्ही रहो न लगे यहाँ हम।

10

वह नहीं कहते हम जपें हैं, जपते प्रभु को चैन मिले है। इस घट के तुम नाथ रखैया, प्राण पुकारे तुझे रटे हैं। अंधियारे में कुछ न दीखे, नजर उठाकर हमें देख लो। अपना ना कुछ बालक तेरे, नीर बरसते हमें थाम लो।

गिर गिर जाऊँ कांपे जियरा, कोई न तुम बिन प्रभु खिवैया। तपती धूप बदन यह झुलसे, कृपा करो दो अपनी छैंया। बसा लूँ दिल में तू न जाये, सुपनो में तू फिर फिर आये। बालक तेरे तुमको जपते, गये हार हम तुझे बुलाये।

बस जाओ मेरे नैनन में, बहती है आंखियों से धारा। डगमग नौका पार लगा दो, तुझे पुकारूँ नहीं सहारा। फूल माली तेरे चमन के, दया तुम्हारी प्रभु चाहते। प्रीति बढ़ाऊँ दीखो नहीं तुम, तुम बिन कृपा नही दुख मिटते।

कांटे जग के हमें लगे है, गिर गिर जाये जख्म रिसें है। नहीं दीखों तुम्हे पुकारे, हरि घट जाने धान्य वही है। नश्वर मेला बिछुड़ा जाता, अपना ना, सब उसका खेला। देखो मनुआ बहो लहर सा, जप कटते सब मन के मैला।

11

बह रहे हैं नीर श्यामा, जग के रखबाले रामा। नाम तेरे हैं अनेको, तुम ही प्रभु सुख के धामा। ढूंढ़ते फिर रहे तुमको, चाह यह पायें चरण को। अश्रु से धोयें उसे हम, सब भूल कर मिले तुमको।

विरह में जलते रहें हम, तुझे भूलें हम न रामा। जगत वैभव है नहीं कुछ, जो छिपा विरह में रामा। ईश्वर तेरे गीत गा, काटूँ जगत का रास्ता। तुम स्का मुझसे न होना, अनजान यह है रास्ता।

बह रही लहरे अनेकों, खोजती क्या शोर देखो? छोड़ बाहर देख मन तू, छिप रहा अन्तस में देखो। शिशु बने उसको पुकारो, गुनगुना ले जा रहा रथ। जप उसे बीतेंगे यह पल, शान्ति का यह जान ले पथ।

12

हे राम राम हे राम राम, ढलती जाती है यहाँ शाम। तुमको पुकारते प्राण राम, नौका को कर दो पार राम। बन अज्ञानी घूम रहे हैं, न ठौर कहीं भी पाते राम। अपना ना कुछ इस जग में है, सुख के स्वामी सुख के धाम।

मन बैचेन हुआ यह डोले, आँखे रोती हैं मेरे राम। वीणा में स्वर अब न बजते, रूठा बसन्त क्यों मुझसे राम। बिछुड़ गये तुम सुधि क्यों भूली, मेरी क्या ऐसी भी करनी। जन्मों जन्मों का प्यासा हूँ, करो कृपा तुम दे दो पानी।

नीर गिरें आँखों से झरझर, ढले शाम बस तुझ यादों में। चरणों की रज पाऊँ तेरी, कलुष मिटे सब खोऊँ तुझमें। दीप जला दो तम में प्रभु तुम, पगले हम समझो ना ज्ञानी। कठपुतली हम तो तेरी है, प्यार हमें तू दे दे दानी।

13

गिरते आँसू बूझे न बात, न कोई साथ मन है उदास। बहती लहरों को देख रहा, पिय से मिलने की मुझे आस। यह सजा जहाँ रस रंगो से, मन लगता फिर भी नहीं यहाँ। कैसे पागल मन समझाऊँ, तू सृष्टि रचयिता छिपा कहाँ?

कह कह ;षि मुनि सारे हारे, मेरे प्राणों के प्रिय प्यारे। तू ही कह भाग्य विधाता अब, खुश हो कर जो हमको तारे। प्रभु लख लो तुम बहते आँसू, दिन रात रो रही यह अंखियाँ नैनन में प्रभु तुम बस जाओ, ना हमको भावे जग वतियां।

ले कर चाहत सब जग घूमे, टूटे कितनी अंखियाँ रोवें। जीवन मेला बिछुड़ा जाता, बिन साजन चैन नहीं आवे। ले चलो मुझे सद्पथ पर तुम, अज्ञान तिमिर में घूम रहा। मिल जाये कृपा तेरी मुझको, चाहत यह लेकर घूम रहा।

14

पुष्प सूखे नीर नयना, दीखता कुछ भी नहीं। अब संभालो हरी हमको, तुम बिना कुछ भी नहीं। ना परीक्षा ईश तुम लो, डोर तेरे हाथ में। सांस हरपल जप रही है, आँख मेरी शून्य में।

अबली हम तुम सबल हो प्रभु, जानते कुछ भी नहीं। नाचती यह सृष्टि सारी, ईश सबका तू मही। जायेंगे कहाँ ना पता, नमन स्वीकार कर लो। प्यार को हे नाथ देना, नीर को ईश लख लो।

*तुम न हमसे जुदा होना, न कभी होना खपा। तेरे बालक हम प्रभु जी, चाहते तेरी कृपा। यह भटक जाये नहीं रथ, बसो प्रभु तुम नयन में। अनजान रास्ता है सकल, थाम तू बाह मग में।*15

किसका सहारा ले यहाँ, मन जप उसे रस्ता कटे। छुटते यह साथ सब ही, उसकी शरण जा दुख मिटे। तपती राहें अंधोरा, कर दया होवे सबेरा। दास तेरे ईश हम है, ना कभी करना किनारा।

जा रहे दिन फिर न गम हो, मन अमी का पान कर ले। नाम जप ले ईश का तू, छवि हृदय उसकी बसा ले। प्रीति मनुआ कर हरी से, सभी को जाना वहाँ है। छोड़कर उसको जगह ना, गर्व क्या करना यहाँ है।

आये कुछ भी जानते न, जायेंगे न रूक सकेंगे। सुमर उसको खेल ले तू, कर्ता बन निज को छलेंगे। उसे भूले रो रहे हैं, सूखते आँसू नहीं है। हरि कृपा बिन दुख मिटे ना, सत्य जीवन का यही है।

16

बिन हरिकृपा नहीं कुछ होई, किन सुपनों में तू है खोई। टप टप गिरते आंसू तेरे, इस जग का रखवाला बोई। सुख दुख की दुनिया में घूमे, बिन हरि भजन चैन नहिं पावे। जप उस अमृत को पी ले मन, धान्य याद कर नीर गिरावे।

इनका कोई मोल नहीं है, खूब लुटा ले मनुआ मोती। नीर गिरे हिय कमल खिले है, याद करे जब अँखियां रोती। लहर बह रही नहीं ठिकाना, जप उसको साजन घर जाना। कितने दन्श लगे इस जग में, याद करे बिन धौर्य मिले ना।

*अपने बल ना चल पायेगे, विनय हमारी प्रभु जी सुन लो। ज्ञान दीप तुम ही दर्शा दो, दास तुम्हारे शरण राख लो। हरि हरि कहते मगन रहे हम, सुख दुख का है खेल तुम्हारा। मेरे जीवन सर्जक सुन लो, कृपा होय तो मिले किनारा।*17

जी नहीं लगता यहाँ पर, नाव अपनी ले चलो। अश्रु से यह नयन भीगे, ना किनारा कर चलो। अबल हम तुम नृप मही के, नमन हम करते तुझे प्यार हमको मिले तेरा, कर नही वंचित मुझे।

तेरी दया का पुजारी, नाथ मैं मति मन्द हूँ। चाहूँ मैं तुझमें खोना, क्यों विरह से दूर हूँ। तेरे विरह में ही जलूं, भस्म सारी चाह हो। नाव में मैं बैठ तेरी, छोडूं सब तुम ही हो।

देख लो हे नाथ हमको, थके यहाँ चलते चलते। प्यार तेरा नित बरसता, ना समझे क्या करते। अश्रु यह स्वीकार कर लो, प्यार का प्रभु दान दे दो। गीतों को गा तुम्हारे, कटे पथ वरदान दो।

18

जानते कुछ भी नहीं है, मन लुभाते फिर रहे। ज्ञान करे धौर्य धारण, दर्द जग के सब सहे। अज्ञान में हम घूमते, खोज पर है ज्ञान की। पुष्प उस पर ही बरसते, डगर जिसकी प्यार की।

बिछुड़ते मिल मिल यहाँ पर, पीड़ दिल में बह रही। जान ले सब कुछ हरी का, खेल उसका हम नही। कैसे पाये हम हरी को, ना ठिकाना जानते। मौन है नभ रो रहे हम, प्यार को हम चाहते।

*ईश तेरे दास हम है, विमुख पल भर ना रहें। जपते रहे नाम तेरा, सद्करम करते रहे। बहते लहरो में तेरी, अबल हूँ तुम समझना। चैन आये बिन कृपा ना, ईश तू सम्भालना।*19

पंख भीगे उड़ ना पाये, इन नयन में नीर आये। सम्भालो हमको हरि तुम, शरणा हम तेरी आये। सभी आंखे झांकती है, प्यार को यह तरसती है। चाहत सबकी है अपनी, ना समझ मन उलझती है।

यह कटे पथ जप हरी को, वह सहारा है हमारा। हृदय में उसको बसा ले, जा रही ले तुझे धारा। प्राण का साजन वही है, जप उसे ना ठौर कोई। बिन हरि नहीं चैन आये, डूबे गगरी तू रोई।

प्रीति प्यारे से करो मन, जान सर्जक वह हमारे। सब रजा उसकी यहाँ है, मत बहा यह नीर खारे। ज्ञान का दीपक वही है, उस बिना कुछ भी नहीं है। सुमरता जा चल जगत में, पा विछौना सच यही है।

20

राम जपे बिन चैन न आवे, मनुआ पल पल में अकुलावे। दुखभंजक क्यों याद करे ना, पल पल अंखियाँ नीर बहावे। टूटे जग से वही ठिकाना, नहीं भूल उसके घर जाना। अश्रु चढ़ाता जा चरणों में, दे सुगन्धा गा वही तराना।

चले न अपनी मर्जी उसकी, उसकी तो हम सब कठपुतली। सुख दुख का वह खेल खिलाये, धान्य सुरति उसके संग हो ली। मिट जाना है राम राम कह, प्रीति लगा खोना उसमें है। किससे तू आसक्ति करेगा, रंग बदलती यह दुनिया है।

*जपले हरि को कष्ट मिटे सब, नाच रहा है यहाँ वही रब। संशय छोड़ सुरति कर उसकी, देखे मुक्ति नहीं हो फिर कब। धयान धारें हरि का सुख पावे, नित उसके गुण गाता जावे। बहता सब बस उसे पुकारो, मैं खोवे अमृत रह जावे।*21

ईश चरणों में विठा लो, रो रहे मेरे नयन। यहाँ पर है घुटन कितनी, सही जाती ना चुभन। लहर के खा खा थपेड़े, हम यहाँ जख्मी हुए। छिप गये तुम किस जगह पर, क्यों खा मुझसे हुए।

अर्चना कैसे करूँ मैं, फूल सब सूखे हए। ढूढ़ता फिर भी तुझे मैं, तुम बिना पागल हुए। दीवानी मीरा राधाा, बन पागल जग घूमी। तू पढ़ा दे पाठ अपना, भूलूँ मैं जग शूली।

इन नयन में प्रभु बसो तुम, न कभी खोलूँ इन्हें। बीती जायें यह घड़ियाँ, हो ना शिकवा तुम्हें। दास को स्वीकार कर लो, ज्योति हिय में जला दो। शुभ करम करते हुए, पाये हम यह वर दो।

22

राम रामा राम रामा, बस हृदय में मेरे रामा। मैं पुकारूँ नीर बहते, सुधिा हमारी ले लो रामा। जियरा डरे अनजान पथ, कहाँ पर सोया हुआ है? मत भूलो तेरे बालक, तम घना छाया हुआ है।

ज्ञान का दीपक जला दो, पा सकूँ रज पथ बता दो। दास तेरे ईश हम हैं, वंशी की धुन सुना दो। खेल सुख दुख का खिलाते, लिये झोली हम खड़े है। बिना तेरे रो रहे हैं, प्यार तेरा चाहते हैं।

आ जाओ मेरे सैया, बीती जाती हैं घड़ियाँ। कंठ प्यासा राह तपती, अब बरसो दे दे छैयां। बीत जाये यह रूर सब, अश्रु को स्वीकार कर लो। नयन में मेरे बसो तुम, द्वार अपने तुम बिठा लो।23

सुख को खोजे उसे न पावें, नाचे मनुआ बन दीवाना। क्षण-भंगुर जीवन में जीना, जाने ना उसके घर जाना। कितनी लहरे उठे जगत में, बहती जावें हाथ न आवे। चले साथ ना प्रेम बढ़ावे, पागल घुट घुट कर मर जावे।

प्रेम बाट तू निज सुगन्धा दे, अपना ना कुछ है यह जाने। दो दिन के मेले में आये, कब खो जायें यह ना जाने। हरि जप हरि जप सुख दुख में जप, इस अनन्त में साथ निभाती। जग के शूल सहे ना जाये, यादें उसकी रि रि आती।

पागल भूल न जप ले उसको, मनुआ किससे नेह बढ़ाये? अपना अपना खेल खेल कर, सब ही पर्दे में छिप जाये। सत्य वही जप उसे निरन्तर, वह ही सर्जक वह ही राजा। मर्जी उसकी जहाँ ले चले, बजे न बिन मर्जी के बाजा।

24

ईश कृपा करना तुम हम पर, बालक हम हैं संतान तेरी। दुख के जंगल में नहीं भटका, तुम वसो नयन सुधि लो मेरी। अज्ञान तिमिर में घूम रहे, हे ज्ञान पुन्ज तू ज्योति जला। निशिदिन तेरे मैं गुण गाऊँ, न करूँ किसी से कोई गिला।

दीवानी थी राधाा मीरा, सब छूट गया पी विरह सुधाा। सब भूल जगत के नाथ दन्श, खोऊँ तुझमें दे यही विधाा। डगमग मेरी नौका हरपल, इसको प्रभु पार लगा देना। नयना बरसे रिमझिम मेरे, ना दूर कभी मुझसे होना।

करूँ अर्चना पास नहीं कुछ, झोली खाली रोता हूँ बस। मेरे प्राण पुकारें तुमको, राख शरण दिल में आओ बस। पाप पुण्य सुख दुख का जंगल, लांघ सकूँ न करता क्रन्दन। पड़ा चरण में थक कर तेरे, नाथ संभालो काटों बंधान।25

नीर मेरे गिर रहे हैं, लाज मेरी राखना। डगर है अनजान मेरी, नाथ तू सम्भालना। रो रहे कितने यहाँ पर, नहीं हृदय पसीजता। शून्य में तुमको पुकारे, तू हमारा नियन्ता।

अबल हम तुम सबल हो प्रभु, बस नहीं हम रो रहे। करते विनती तुमसे यह, ईश तू दिल में रहे। बैठ तेरे द्वार पर हम, अर्चना तेरी करें। तुझ विरह में ही जले हम, प्यार तेरा ही वरें।

हाथ जोड़े हम खड़े हैं, नीर अँखियों में भरें। नैन में मेरे वसो प्रभु, सृष्टि परिकर्मा करे। दास तुम अपना बना लो, प्रभु अधूरी अर्चना। प्राण तुमको ही पुकारें, करूँ विनय न भूलना।

26

जो जला विरह में उसके, राम ही बस रह गया। मैं मिटी भूले जगत को, नीर से सब बह गया। ना जानते गुमनाम है, राम ही बस राम है। दीप आशा का वही, उस बिना ना ठांव है।

मीठी है उसकी तपन, अश्रु में मोती छिपे। पूछता न जिनको कोई, राह से हिय में चिपे। हरपल बदलते रंग हैं, प्रीति किससे हम करें। रंगता प्रभु के रंग जो, धान्य समर्पित निज करे।

याद लेकर गिरे पथ में, रि शिकायत क्या करे। जिसकी मर्जी से आये, जप उसे रि हम मरें। दर्द ले उसी का पगले, नहीं बढ़कर और है। जाती यह बीती घड़ियाँ, कुछ पलों का खेल है।

*मुक्ति हो जाती दुखों से, हृदय में जब हरि बसे। अदृश्य धागे से बंधाकर, वह पुकारे बस उसे। राम को जपते रहो मन, बह रहा देख दरिया। अश्रु आँखों से गिरे मन, जान ले तेरा पिया।*27

न मिलो मर्जी तेरी है, भक्ति का दान देना। अश्रु से यह नयन भीगे, पथ कटे प्यार देना। देखते तुझ ओर हैं हम, तम यहाँ घनघोर है। मूर्ख मैं मतिमन्द हूँ, प्रभु, ज्ञान का भण्डार है।

लाज मेरी राखना प्रभु, शरण में तेरी पड़े। भस्म तन हो विरह में ही, गीत तेरे ले उड़े। तुम मेरे दिल में आओ, मूर्ति तेरी ही दिखे। कह सकूँ कुछ न मैं हारा, अश्रु से पाती लिखूँ।

खोजते तुमको रहेगे, घूमते बन्धान लिये। यादें तेरी ही प्यारी, जियें हम हिय में लिये। सद्पथ पर ले चलो हमें, पा सकें तेरी कृपा। तुम हमें विसरा न देना, ना कभी होना खपा।

28

मुझको हरि तुम नाहिं विसारो, चरण पड़ा मैं दास तिहारो। करूँ अर्चना पथ ना जानूँ, ले चल मांझी पार उतारो। तेरी करूँ अर्चना हरपल, जी भर आये रोयें नयना। सकल सृष्टि के तुम हो स्वामी, यादों में कट जाये रैना।

प्रीति बढ़े जियरा सुख पाये, जग के सारे दन्श भुलाये। नैनन में बस जाओ मोहन, सब भूलूँ ना और रूलाये। डगमग डगमग मेरी नौका, कहाँ उड़ा ले जाये झौकां? सम्बल तेरा ही बस मोहन, चरण मिले रज दे दे मौका।

बजती रहे बांसुरी तेरी, सब हम तो हैं तेरी चेरी। दया सदा रखना प्रभु हमपर, नहीं भटकें लगावे ेरी। इस जीवन के तुम बसन्त हो, तुम इन प्राणों की हो उमंग। जपें हरि हरि कटे यह रस्ता, मैं करूँ विनय तुम रहो संग।

*पिव पिव रटे पिया ना आवे, कैसे इस दिल को समझावे? आग विरह की कभी न कम हो, वर दे भस्म इसी में होवे।*29

मैं हरि आयो शरण तिहारी, लाज राख मेरी गिरधारी। दर दर भटकूँ मैं इस जग में, चैन न आवे तुम बिन हारी। पथ के दीपक तुम ना रूठो, अपनी करूणा को वर्षाओ। बालक हम सब तेरे प्रभु जी, ज्ञान ज्योति हे नाथ जलाओ।

पथ पर चलूँ तुम्हे न भूलूँ, भक्ति का रस तुम्ही पिलाओ। यह दुनिया दो दिन का मेला, जपूँ प्रभु मुझे पार लगाओ। प्रीति बढ़े प्रभु हरपल तेरी, टूट जाये भ्रम की डोरी। बसे रहो नयनों में मेरे, सभी भुलाऊँ जग की केरी।

प्रभु हम रोते ले लो तुम सुधा, अज्ञानी हैं जाने नहिं कुछ। बन्शी बाजे नाचे जियरा, ऐसा ही कर दे मोहन कुछ। ले चल मेरे नाविक नौका, जलधा बीच जियरा घबराये। मिले कृपा तेरी प्रभु हमको, नैया पार तभी हो पाये।

30

पल पल यह परिवर्तित जीवन, कौन मिले कब खो जाये। जिसके हरि हिय में बस जाये, लहरों सा बहता जाये। प्रीति करें किससे जग में हम, नहीं तृप्ति उससे मिलती। पकड़ न कर मन बह जा हरि में, तृप्ति सदा उससे मिलती।

दुनिया यह दो दिन का मेला, कितना ही बन ले छैला। बिन सुमरे हरि चैन न आवे, सोच नहीं कर मन मैला। यह अनजान डगर है लम्बी, पार न हो उस बिन पगली। नयन बसाओ मूरति उसकी, जानो उसकी कठपुतली।

*मन हरि जपो कटे पथ सारा, नैया वह खेवनहारा। सुख दुख के वह खेल खिलाये, जाने वह सृजनहारा। सुरति लगा हरि में मन पागल, बिन उसके ना तन पावन। नीर बहें कर उसे समर्पित, नैया पार करे तारन।*31

मन भूल जा मन भूल जा, ना शिकायत अब करे। आ रहा सागर निकट है, ताप सारे वह हरे। जानो दो दिन का मेला, मंच पर अभिनय करे। सुमर हरि कर पार रस्ता, ना पता हम कब गिरें।

झूम जब तक हरि झुलाये, वह सुलाये बस नहीं। सच यही स्वीकार कर ले, सकल जग का वह मही। बिन हरि नहीं चैन आवे, प्यार को हम तड़ते। टूटे बन बन के सुपने, नीर नयना निकलते।

उस नियति को हो समर्पित, बहे जा इस जलधा में। नीर आंखों से बहें जो, तू चढ़ा हरि चरण में। नाच जैसा वह नचाये, लहर बन कर जप उसे। धान्य जग में वह हुए हैं, वसा हिय रटते उसे।

32

तेरी दया बिन चल न पाऊँ, वर दे तुमसे प्रीति बढ़ाऊँ। सकल जगत के तुम हो स्वामी, अबल ईश मैं कैसे पाऊँ? मेरे नयनन में बस जाओ, संग तुम्हारा चाहे मनुआ। कट जायें भ्रम नाचे जियरा, तेरे बिन उठता है धूंआ।

मुझे थाम लो पार लगा दो, डूब रही है मेरी नौका। शक्तिमान तुम अज्ञानी हम, कृपा करों तुम दे दो मौका। अनजानी दुनियाँ में घूमें, झर झर नीर नयन बरसावें। तुम करूणा के सागर हो प्रभु, चल कर तेरे पथ पर आवें।

*कितने टूटे उठे गिरे हम, आंसू मेरे बरसे रिमझिम। लगा विरह की आग न भूले, भस्म होय तन हृदय रहो तुम। अंधियारे में दीप जला दो, मेरे सर्जक मुझे न भूलो। जपता तेरा नाम रहूँ मैं, बहता जाऊँ मैं को हर लो।*33

हरि तुम राखो लाज हमारी, पार लगे ना तुम बिन नैया। मन जप ले गा गीत उसी के, कभी पिघल जायेगा जियरा। घिरे वासनाओं मे हरक्षण, नीर गिरायें अंखियाँ हरपल। तुमको भूले चैन न आवे, वर दो भूले ना हम इक पल।

नाथ तुम्हारा विरह प्रिय है, बढ़ा इसी में मैं खो जाऊँ। मृगमरीचिका जग की छूटे, छवि तेरी प्रभु नैन बसाऊँ। जगकर्ता हम तो बालक है, पता न कित ले जाये झौका। नीर चढ़ावें हम अंखियों के, मिले चरण रज दे दे मौका।

काली रातों का तू दीपक, तुम बिन जियरा करता धाक धाक। कदम लड़खड़ाते हैं मेरे, बढ़े प्रेम मैं जाऊँ न बहक। रूठ न हमसे नहीं ठिकाना, मर्जी तेरी चले जमाना। प्राणो के तुम ही श्रृंगार हो, हरि तुम नहीं मुझे विसराना।

जीवन की तुम ईश सुधाा हो, जिसे पी गई हँस कर मीरा। ूल बने आँखों के मोती, बही नाव काटे सब घेरा। नीर बहें तेरी यादों में, तुमको कभी न भूले साजन। नहीं वासनाओं में उलझे, प्रीति बढ़े तन मन हो पावन।

34

तुम हरि राखो लाज हमारी, बीच रही मैं जल में प्यासी। अगम अगोचर पार न तेरा, अंखियां रोवें भई उदासी। बन्शी की धुन सतत बज रही, बनी अभागिन कहाँ खो रही। करूँ जतन रंग जाऊँ रंग में, मैं हार गई छिप गया कहीं।

अबल नाथ हम तेरी चेरी, सकल मही करती है ेरी। अज्ञानी बन जग में भटकूँ, करो कृपा ना अब कर देरी। दीप बुझा है घना अंधोरा, मिटे रैन कब होय सबेरा? बहते आंसू नाथ संभालो, नयन बसो टूटे सब घेरा।

पाप पुण्य कर्मों के बन्धान, पार कर सकूँ ना मधु सूदन। मेरी आशा बस तू ही है, पार लगा दे ओ मन मोहन। अंखियाँ रोवें तू नहिं आवे, कैसे इस मन को समझावे? अकेले भये भरीभीड़ में, चाह प्यार तेरा हम पावें।खुशियों का सागर है तू ही, जले धारा तब बरसे तू ही। अज्ञानी हूँ समझ न पाऊँ, लाज राखना मेरे माही। पड़े वासनाओं में चलते, नये नये नित जाले बुनते। तृप्त नहीं जग धूल चाटते, सांसे थोड़ी तुझे भूलते।

पार दे लगा दे मेरी नौका, तम में प्रभु तू दीप जला दे। सर्जक मेरे सेवक है हम, इस जीवन को राह दिखा दे।

35

बता कहाँ मैं तुमको पाऊँ, क्या यों ही घुट घुट मर जाऊँ? मेरे देवता तुम ना रूठो, अंखियों का मैं नीर चढ़ाऊँ। तुम हो सकल मही के राजा, कृपा मिले सि) होवे काजा। जन्म मरण का चक्र चल रहा, पार लगा दे नौका आ जा।

दीनबन्धु तुम सुख के दाता, जीवन मेरा भया उदासा। तपती धारा बरसते तुम्ही, बना मुझे मन्दिर का दासा। सदा निहारूँ मूरति तेरी, जाऊँ भूल जगत की केरी। जाती संधया तुझे पुकारूँ, ठुकरा ना मैं तेरी चेरी।

नाम प्रभु जी होठों पर हो, विष पी जाऊँ अमी समझ कर। बसे रहो नयनन में मेरे, डर लागे कुकारें विषधार। हरि हरि कहते कट जाये पथ, नहीं किनारा कोई जाने। मर्जी तेरी आना जाना, संकट मोचन तुमको माने।

36

पी बिन प्यासा भटक रहा मन, नहीं खोजता हरि को पागल। रूके न देखे भागत जावे, पल पल रंग बदलता पागल। थक थक टूटे हरि नहिं बूझे, पेट आग में सब कुछ झुलसे। पर हरिनाम जपे जो हरपल, ग्रन्थि सकल मारग की सुलझे।

दो दिन का मेला यह दुनिया, उसे भूल ना जला ले दिया। शिशु बन उसे पुकारो हरदम, इन प्राणों का वह ही जिया। कितना पा लो अन्त नहीं है, सुमरो हरि मन अन्त यहीं है। बैरागी बन जी ले जग में, नदिया सा बह जलधा यही है।

*बिन हरि जले न तेरा दीपक, छतियाँ काँपे हर दम धाक धाक। बसा हृदय में हरि की मूरति, चल पैरों में ताकत जब तक। धयान धारो मन हरपल उसका, कष्टों में वह ही सहलावे। जीवन की अन्तिम घड़ियों में, वह हँस अपनी गोद सुलावे।*37

सकल जगत का तू मालिक, कर्ता भर्ता हन्ता हो। नीर आँखियों से बहें यह, भटक रहे तुम आशा हो। नाचे हम हैं कठपुतली, ना भूलो तुम सर्जक हो। दया करना पायें तुझे, अबल हम शक्ति दाता हो।

देना तुम पथ नाथ हमें, सुख के सागर तुम्ही हो। दिल में बस मेरे मोहन, तुम नयन की प्रभु ज्योति हो।ं नहीं जानते चलते हम, कहाँ हमें फिर जाना है। तेरे एक इशारे पर, नाचे सभी जमाना है।

दीप ज्ञान का तू ही है, तम में हमें न भटकाओ। करें अर्चना तेरी हम, पार नदी को करवाओ। नहिं भूले तुझे एक पल, रैना सारी कट जाये। वन्शी धुन बाजे प्यारी, प्राण फिर लय हो जायें।

38

कितने छूटे कूल यहाँ पर, इनकी क्या कुछ गिनती है। जीवन नदिया बहती जाती, छोड़ बीत जो जाती है। आशा का संसार बना कर, प्रतिक्षण हम बहते जाते। छूट गये जो कूल यहाँ पर, उनको हम रोते रहते।

गम न कर कुछ हाथ नहीं है, बहता जा नियति यही है। शिकवा न कर बह ले जग में, जीवन आनन्द यही है। यादें अतीत की हैं प्यारी, लगती उनमें भी खारी। बंधाा रहा तू उन यादों में, वर्तमान खो फिर हारी।

*प्यार प्यास को लिये भटकते, शुष्क हृदय ले कर फिरते। कैसे मैं मन को समझाऊँ, न हँस सके रोते रहते। बहता जा पागल अहम् छोड़, उसकी ही तो माया है। साँसों में कर जाप उसी का, उसकी ही यह काया है।*39

चाहतें सब हो विसर्जित, राम तेरे गीत में। यह हमें अनजान दुनिया, नीर बहते आंख में। खड़े हम हैं हाथ जोड़े, प्रतीक्षा तेरी करें। तुम न हमको भूल जाना, प्राण यह सुमरण करें।

सत्य तू हम तो खिलौने, प्यार तेरा चाहते। दर्द के दरिया में बहते, पथ तेरा निहारते। ना छलो दे कर भुलावा, बीतती जाती घड़ी। नीर को इक बार लख लो, द्वार तेरे मैं पड़ी।

कितना रोये तुम मिले न, चाहतें धूमिल हुई। चाहूँ मैं तुझे निहारूँ, छोड़ सब जोगन भई। लाज मेरी राखना तुम, तमस को प्रभु जी हटा। अबल हम तू शक्तिदाता, कंटकों को तू मिटा।

40

जाने वाला कुछ ना पूछे, अपनी धुन में बहता जाता। सब अपने सुख को रोते है, दो पल का है सबका नाता। पार लगेगी नौका हरि जप, इस जीवन में वही सहारा। जलता जियरा धूप तपे जब, पी ले नाम उसी का प्यारा।

एक वही शाश्वत सब लीला, मन ना माने रोवे जियरा। प्रभु चरणों में विठला अपने, नौका पार करा मैं हारा। सदा जपें हरि हरि सुख पावें, प्यारे तुमसे प्रीति बढ़ावें। कट जायें कर्मों के बन्धान, मन खिल जाये तुझको पावें।

*सबल तुम्ही ईश हम निर्बल, बिना कृपा ना हम चल पाये। जतन करो कुछ प्रभु जी ऐसा, तेरी यादों में खो जायें। तेरे मंदिर में बस जायें, सारा अंधियारा छट जाये। बसे रहो मेरे नयनन मैं, प्रीति तुझी से बढ़ती जाये।*41

जायेगी कट जिन्दगी यह, जाओ बस नयन मेरे। मुझको मांझी ले चलो तुम, अश्रु यह गिरते मेरे। कांपता यह दिल मेरा है, तुम हो दयालु मैं अबल। संधया बीती जा रही है, अब नहीं तोड़ो यह दिल।

नहीं छिपो तुमको पुकारें, शरण हम स्वीकार कर। कट सकें यह सारे बन्धान, दूर कंटक तू ही कर। नहीं छलो हारा मुसाफिर, यादों को ले रो रहा। सकल जग के तुम हो स्वामी, प्यार को मैं चाह रहा।

प्यार दे दे मुझको ले ले, होवे यह जीवन सफल। तूल तेरी बगिया के हम, प्यार बिन न जाये ढल। तुझे समर्पित नाथ हम हों, सहज बने जीवन सफर। तुमको मैं दिल में बिठा लूँ, बहता जाऊँ बन लहर।

42

कुछ ना पूछा उसने मुझसे, अपनी धुन में बहता जाता। कितना ही हम भागे पीछे, ना हाथ हमारे वह आता। मन पागल समझे ना कुछ भी, सत्य न समझे रोता रहता। बहें लहर सब अपनी धुन में, सुन संगीत मधुर यह आता।

बहता जा लहरों सा बन कर, नहीं हाथ सब कुछ करूणाकर। मर्जी यहाँ चली किसकी है, दिल में बसा उसी का मन्दिर। पल दो पल का मेल हो रहा, बिछुड़े लहर काहे रो रहा। प्रीति लगा ले हरि से मनुआ, कुछ ना तू बस वही बह रहा।

उसकी याद बड़ी हैं प्यारी, कट जायेगी रैना काली। साथ वही रख भरी भीड़ में, सूखेगी नयनों की लाली। हरि जप हरि जप बहो लहर सा, बहता जीवन यह सुपना सा। सुख दुख के वह पार उठाये, जले दीप हिय में सूरज सा।

*करें अर्चना हरपल तेरी, नाथ यही है मर्जी मेरी। इन नयनों का नीर न सूखे, करते रहे प्रतीक्षा तेरी।*43

अपने आंसू किसे दिखायें, निज पीड़ा को किसे पिलायें? सारी दुनिया भागी जाती, कितना तड़ों हाथ न आये। मन मन्दिर को सजा बाबरे, प्रियतम बैठा ले तू पगले। करो अर्चना हरपल उसकी, देखो लीला धीरज धार ले।

जियरा रोवे याद उसे कर, सुने और न कोई जग में। अपने से सारा बोझिल जग, चल ताकत जब तक है पग में। हरि हरि सुमरो और न कोई, पार लगाये तेरी नौका। इन साँसों में उसे बसा ले, तन छूटे फिर मिले न मौका।

कठिन राह अनजाना पथ है, धौर्य वही तेरा ईश्वर है। उस बिन हरपल हो दिल टुकड़े, उसे भूल न वह खेवट है। प्यार हमें दो तेरे बालक, चरण पड़े पथ को दिखला दो। दया दृष्टि प्रभु सब पर रखना, प्यासी धारती को जल दे दो।

तेरे बालक कुछ ना जाने, रो रो कर बस तुझे पुकारें। टूटी वीणा बजे न सरगम, बिगड़ी को प्रभु तुही संवारे। लौटा ना अब कंठ भरा है, मेरे स्वामी छिपा कहाँ है? सूज गई यह मेरी अँखियाँ, तड़ूँ मैं दिल टूट गया है।

ईश बसा ले निज चरणों में, कट जाये यह काली रैना। आगे पीछे सब तू ही है, कान सुने तेरे ही बयना।

44

नहीं सुनोगे तेरी मर्जी, रोते हम मर जायेंगे। अश्रुओं से हैं गीत भीगे, विरहा गीत कहायेगे। कुछ भी समझ हम ना सके प्रभु, रोते गुजारी जिन्दगी। तुमको नहीं खुश कर सके हम, मेरी अनाड़ी वन्दगी।यह दिल धाड़कता चल रहे हैं, धूमिल हंसी मेरी हुई। मिलता नहीं तेरा ठिकाना, यह जिन्दगी बोझिल हुई। इतना बिखेरा दर्द क्यों प्रभु, नयनों से नीर बह रहा। नहीं बनो निर्मोही इतने, प्यार ईश मैं चाह रहा।

अबल हम तो है तुम सबल हो, नयन क्यों मूंदे हुए हो? शुभ कर्म पर तुम ही चलाना, ज्ञानदीप प्रभु तुम्ही हो। यह गिर रहे है नीर मेरे, मैं नहीं दोषी जगत में। मैं भूल सकूँ तन की पीड़ा, लीन हो जाऊँ तुझी में।

यह अश्रु बहते नाथ देखो, विनय को स्वीकार कर लो। नाचें हम कठपुतली तेरी, प्यार से हमको नचा लो। गीत गाये हर सांस तेरा, रैन काली कर सवेरा। मेरे दिल से तुम ना जाना, बह सकूँ मिट जाये तेरा।

तुम ही हमारी आस हो प्रभु, पार यह नौका लगाना। यह बीत जायेगी कहानी, बन्सरी अपनी बजाना। कुछ समय का है खेल बाकी, नाथ ना मुझको भुलाना। इस कण्ठ में वह स्वर नहीं है, चाहता फिर भी सुनाना।

45

बहें नीर जब उसे पुकारो, जलता मनुआ शीतल कर लो। देख शून्य आवे इस पथ से, ताप हरे दुख भंजक जप लो। अगम अगोचर दूर नगर है, खोजे मनुआ नहीं खबर है। उसे बसा दिल में घूमें जब, जाने तब तू लहर नदी है।

बीती जाती जीवन संधया, जप ले उसको प्रीति बढ़ा ले। नीर बहें जब उसे चढ़ा दे, रोते दिल को तू हर्षा ले। क्या अपना बीते सब सपना, उसकी बन्शी स्वर में खो ले। जाता सुपना तू भी सुपना, इस सुपने को सुख से भर ले।

करो समर्पण बह नदिया में, हरि हरि करते बीते जीवन। जान लहर तू नदी नहीं है, धान्य कुल हो जाये जीवन।

46

छोड़ सब जाते यहाँ पर, यह नियति का खेल है। ना शिकायत कर किसी से, चाहते ले विवश हैं। नदिया यह बहती जाती, देख सागर निकट है। दुख नहीं कर हम खिलौने, कुछ पलों का खेल है।

सुख को अपने रोते सब, कोई किसी का नहीं। यह बहायें नीर अँखियाँ, बिछुड़ कर मिलते नहीं। कर्ता जग का वह पालक, निर्बलों का बल वही। तम में कुछ न दीखता जब, पुकारो पथ दे वही।

यह लगेगी पार नौका, हरि जपो ज्ञानी वही। सांझ ढलती जा रही है, शान्ति की मूरति वही। कूल सभी छूटे जाते, सृष्टि का यह खेल है। इस नदी में बहे जा तू, छूटता मैं शेष है।

47

मिले छांव पावन हो यह मन, तू ही मेरे मन का साजन। सदा कृपा तेरी मैं चाहूँ, दिल की तू मेरे मोहन सुन। तेरे इंगित पर जग चलता, सूनी अँखियाँ देखे रस्ता। जब होती बरसात नयन में, तुम बिन कुछ ना मुझको भाता।

तेरी यादें लागे प्यारी, इन अंखियों में पानी आता। तोड दिये सब नाते रिस्ते, हरि बिना न कुछ भी भाता। निर्बल हम सबल ईश्वर तुम, कर्ता इस जग के पालक हो। अंखियों से नीर बहें मेरे, क्यों भूले मुझे दयालु हो।

*तुझे पुकारे तेरे बालक, प्रीति निभाओ प्यारे प्रियतम। अनजानी जग की पगडण्डी, दूर हटाओ प्रभु जग का तम। पार लगा दे मेरे नाविक, डरपे जियरा करता धाक धाक। मेरे नैनन में बस जाओ, लगे न डर मैं पहुँचू तुझ तक।*48

नहीं मिले हमें किनारा, पर शिकायत हो नहीं। सहन हो जो हमें दे दे, पास रह भटकूँ नहीं। दास तेरे घूमते है, नयन से लगती झडी। चाहते हरपल कृपा हम, जीव की तू ही कड़ी।

दुनिया के तुम ही मालिक, नाचता ब्रह्माण्ड है। तेरी कठपुतली प्रभु हम, सब नवावें माथ हैं। नाम तेरा ही लिये हम, पार इस भव को करे। ना कभी विश्वास टूटे, जप सदा तेरा करें।

बहे जायें हो समर्पित, ना किनारा जानते। बस हृदय में हम अबल प्रभु, प्यार तेरा चाहते। अर्चना आंसू से मेरी, पास में कुछ भी नहीं। रूठ ना जाना कभी तुम, प्राण की धाड़कन तुही।

49

समझ सके नहीं तेरे इंगित, कितने दुख पाये जीवन में। संग मेरे हरपल तुम रहना, बरसात बरसती नयनों में। कदम लड़खड़ाते मेरे यह, जग के पालक ना भुला हमें। बहते मेरे नयना देखो, वर दे दे पाये नाथ तुमें।

तुम भूल न जाना बालक हम, तुम्हारा सहारा प्रभु हमें। मन मन्दिर में तुम बस जाओ, मेरी साँसों में सदा रमें। तुम साथ हमारे हो अनुभव, हम खोज रहे तुम मिलो नहीं। बूंद मिटे सागर सारा है, यह दृष्टि हमें दे सदा तुही।

सुख दुख की धूप छाँव में प्रभु, तू खेल खिलाता है हमको। तेरा बस नाम सहारा है, तुम प्यार सदा देना हमको। स्वीकार करो मेरी पूजा, जल गिरता पग धो लेने दो। तन मन की सुधा भूलूँ सारी, बन लहर मुझे बस बहने दो।

50

चरण पड़ा मैं चरण न दीखे, लाज राखना नहीं ठिकाना। बहती नदिया बहता हूँ मैं, नीर गिरे तू ले नजराना। अबल नाथ पथ नहीं जानता, सुन ले विनती मेरे माही। सिसकी लेता तुझे पुकारूँ, विलग नहीं कर दे दे राही।

पाप पुण्य कर्मों की रेखा, कैसे दे पाऊँगा लेखा? सुख की चाहत में भटक रहे, उलझ उलझ गिर खाते धोखा। अबल हम प्रभु नाथ संभालो, नयना बरसे मेरे रिमझिम। सद्पथ पर प्रभु सदा चलाना, आन मिले तुमसे हम प्रियतम।

लहर बने नदिया में बहकर, दिल में तुमको नाथ वसा कर। बीत जाये सारा ऊसाना, सुनो विनय मेरी तुम गिरधार। सुख दुख धूप छांव का मेला, दर्द दिये अब सहे न जाते। पार लगा दे अब तो छैला, करें विनय हम तुमको पाते।

सारी सुधा मैं भूल जगत की, डूबूं मैं तेरे दरिया में। अगम अगोचर पार न तेरा, नहीं भुलाओ मुझको मग में।

51

तेरे द्वारे नाथ पड़ा हूँ, राख मोहि शरणाई। जनम जनम की प्यास मिटे सब, अंखियां भर भर आई। सकल जगत के तुम हो पालक, प्यार मिले खिल जाई। उड़े सुगन्धा चहुँ ओर जग में, डर फिर पास न आई।

अगम अगोचर पार न तेरा, खोजे मनुआ डेरा। प्यार हमें दे अबल नाथ हम, कटा जाये दुख घेरा। अंखियाँ बरसे तुमको तरसे, पी पी प्राण पुकारे। दया मिले तेरी बसन्त हो, जिय के मल सब जारे।

*तू ज्ञानी मैं हूँ अज्ञानी, जाने अन्तर्यामी। अपनी कृपा बनाये रखना, सकल सृष्टि के स्वामी। चढ़े नयन का जल चरणों में, सांसों में बस जाये। मूरति तेरी नयनों में हो, लहर कहीं ले जाये।*52

तू मन शिकायत नहीं करे, अंखियाँ कितनी ही झरे। अपनी अपनी चाह सबकी, नाम ले हरी का तरे। मेला सब जाता बिछुड़ता, जाने न खो जायें कब? दर्द का दरिया है बहता, ना भुलाना मनुआ रब।

तम में दीपक तो वही है, छोडों मैं सब वही है। प्यार से अपना ले उसको, बरसे सावन झड़ी है। चले जा जब तक है ताकत, गिर पड़े देखेगा रब। अपनी मर्जी से न आना, ना पता जायेंगे कब?

ईश के चरणों मे पड़ जा, पथ वह तुमको दिखाये। गीतों को गाकर उसी के, चले जा उसको पाये। उसको भज ले प्यार से मन, कटेंगे सारे बन्धान। छोड़ो जग की प्रीति पागल, बसा ले दिल में मोहन।

53

प्रभु तुम ही नाथ हमारे हो, चलें हम तेरे सहारे है। तेरी यादों में रुर कटे, जग वैभव लगते खारे हैं। झर झर अंखियों से नीर गिरें, बीता जाता सारा जीवन। सुन कर वन्शी को चैन मिले, तू बजा बजा मेरे मोहन।

कोयल गाती आता बसन्त, तुम बिन जीवन लगता पतझड़। निष्ठुर मत हो मेरे मोहन, रस्ता मेरा ऊबड़ खावड़। दर्द तुम्ही हो दवा तुम्ही, कैसा यह खेल खिलाये है। व्याकुल मनुआ यह सोंच रहा, सुपना सा सब खो जाये है।

*तुम कृपा सदा हम पर रखना, हम तो अबोधा और अज्ञानी। जड़ चेतन राज्य तुम्हारा है, प्यासे हैं तुम देना पानी। तेरी बगिया में नाथ खिले, तू ही है प्रभु मेरा माली। विधि से वन्चित करता पूजा, स्वीकार करो मेरी थाली।*54

बनता तू है क्यों खामोश, जग का तू रचैया है। नहीं पैरों में है ताकत, सहारा दे चाहा है। कांटो से भरी धारती है, खिलते ूल इसमें भी। यह अंखियां रो रही कितना, संभाल नाथ हमें भी।

यह तड़े प्राण मेरे हैं, क्यों बरसे झमेले हैं। यह आँख देखना चाहे, लगता हम अकेले हैं। ओ भगवान प्यार तू दे दे, संग हमें तू अपने ले। थकी रो रोकर यह अंखियां, परीक्षा न ले हम पगले।

जीवन का दाता तुही है, थक तुमसे करें विनती। पिता तू मेरी माता है, तरंगे अनगिनत उठती। नाचूँ मैं देखकर तुमको, हाथ की मैं कठपुतली। लगे आंखे मेरी तुम पर, भुलाऊँ बसन्त होली।

55

प्रभु मेरे दिल में आओ, डगमगाती नाव है। मार्ग में अंधियारा है, तुझ कृपा की चाह है। नाथ मुझसे रूठ ना तू, मैं भिखारी द्वार का। खड़ा झोली मैं लिये हूँ, जल न सूखे आँख का।

प्राण प्यासे है तड़पते, जल पिला जिय हो हरा। ज्ञान दे दे भटकतें हैं, तेरा हमें आसरा। आँखों में मेरे लाली, नयन रो यह सूजते। आ जाओ मेरे माली, तुमसे मिलें तड़पते।

*सदा करता रहूँ सुमरण, ज्ञान का दीपक जले। नयन में बस जा मुरारी, ठूल मुरझाया खिले। विछुड़ कर तुमसे प्रभु जी, नहीं जग में ठांव है। झर रहे यह नीर मेरे, तू हमारा ठांव है।*56

कैसे समझाऊँ यह मनुआ, सभी सयाने जग की यह गति। अपनी अपनी चाह लिये सब, सोच समझ वरना है दुर्गतिं। दुख ना दे करूणा को अपना, प्यार बाट ले जग है सुपना। बिछुड़ रही सब लहर यहाँ मिल, पल दो पल का है बस मिलना।

कर न शिकायत शुभ करता जा, नियति खेलती अपना खेला। मर्जी अपनी से ना आना, लिये जा रहा तुमको रेला। ;षि योगी सब धयान लगायें, देखत फिरें कहाँ से आये? आंसू जो बहते नयनों से, करो समर्पित हरि को पाये।

हरि को सुमरो हरि को जी लो, जख्म लगे हरि से ही सी लो। दो दिन की जिन्दगानी सारी, जाम उसी का हरपल पी लो। प्यास भूख और चाह सताये, पल पल अंखियाँ नीर बहाये। करो जतन पर हरि ना भूलो, मिटे सभी पर हरि ना जाये।

बस जाये यदि हिय में मोहन, नदी लहर को खुद ले जाती। सुधा बुधा सारी छोड़ जगत की, मीरा बन आंसू छलकाती। धान्य हुए हैं वही जगत में, किया समर्पण छोड़ स्वयं को। लहरायेगा यह तो सागर, रहो देखते इसकी गति को।

अपना कुछ ना सब कुछ हरि का, गीत हरी के गा चलता जा। बन्जारा बन जग में घूमो, मिले जहाँ डेरा तू छिप जा।

57

नयनन हरि छवि बसा बाबरे, उसका ही तू धयान लगा ले। यहाँ दर्द का दरिया बहता, सदा वही जो तुझे संभाले। जग से प्रीति यहाँ कर हारे, नयन बहाये आंसू खारे। संधया यह अब ढलती जाती, बिन हरि तुझे न कोई तारे।

जप हरिनाम सहारा वह ही, मर्जी उसकी आना जाना। पागल मनुआ चैन वही है, मन मन्दिर में उसे सजाना। गिरते आंसू देखे पथ को, गये हार हमको तुम बल दो। चल कर तुझ मन्दिर तक आयें, मिले प्यार तुम्हारा वर दो।

*हरि हरि कहते बीते जीवन, तन मन मेरा हो यह पावन। बीते यह पतझड़ का मौसम, लहराये गाये फिर सावन। तुम हरि सारे जग के स्वामी, पिला हमें दे अपनी प्याली। अज्ञानी हम पथ दर्शा दे, पडू. पांव आंखों में लाली।*58

कितने छूटे कूल यहाँ पर, नहीं यहाँ इसकी गिनती। कूल हमें मिल जाये तेरा, नहीं चाह कोई रहती। नाच रहा ब्रह्माण्ड यह सारा, तुझमें सांसो को लेता। क्यों भटकन में भटक रहा मैं, नैया सबकी तू खेता।

कैसे पाऊँ मैं अज्ञानी, तिमिर हटा कर दीप जला। नयनों में मेरे बस जाओ, दन्श मिटे ना रहे गिला। मात पिता तुम ही पालक, जिय मेरा करता धाक धाक। बहते आंसू तुझे पुकारे, चलता जाऊँ तुझ पथ तक।

करो दया करूणा के सागर, शीश झुका यहाँ खड़े हैं। बल न मुझमें तुझ तक पहुँचूं, नयन बरसते मेरे हैं। पार करेगा तू ही नौका, बसो हिय न मुझे बिसारो। बहे नीर तेरी यादो में, ना अपना सब कुछ थारो।

59

बिन हरि भजन समझ नहिं आवे, कठिन डगर है लम्बा रस्ता। कातर बनते लिये वासना, जन जन की है यही दास्ता। ज्ञानी धयानी कह कह हारे, समझ नहीं पाते मतबाले। कितने दंश लगें इस जग में, बहते हैं आंसू के नाले।

हरि हरि कहते जो मिट जाये, जाने वश ना वही समाये। सब उसकी मर्जी से चलता, पर ठगनी माया भरमाये। आँधियारे में आँखियां रोती, मन का दीपक वही जलाये। याद उसे कर हरपल सुमरों, समझ तभी मग को तर पाये।

*आंख आंख में झांक रहा क्या, कातर बन तू मांग रहा क्या? दो पल का है सारा मेला, देखो होती जाती संधया। खेल खिलावे धूप छांव का, सुख दुख से वह हमें नचावे। विनय करें प्रभु लाज राखना, तुझ चरणों में माथ नवावें।*60

लहराये सागर लहराता, कर्ता बन क्यों जिया दुखाये। कितनी लहरें बनी मिटीं हैं, जलधा सभी को यही चलाये। निज में झांक स्वयं को देखो, उठती गिरती लहरें देखो। कितने रंग बदलता यह मन, मजबूरी के आंसू देखो।

अपना अपना जाल लिये सब, फैलाये बैठे इस जग में। मिट जाये तू रहे जलधा बस, लहर डूब जाये सागर में। नाच नियति है भूल न हरि को, यही अन्त तक साथ निभाये। साथ छूट जाते सब सारे, खेवट बन कर पार लगाये।

नैन बसा हरि देवे जो हरि, जानो सब उसकी लीला है। चलता जा कर सुमरण उसका, पार लगावेगा हरि ही है। कण कण में हरि नाच रहा है, मंदिर भी हरि का है तू ही। करनी देखो हरपल इसकी, लहर जलधा की पागल तू ही।

घुटती सांसे जब जीवन की, हाय विवशता हमें रूलाती। आंसू बहे न देखे कोई, धान्य जलधा को भूल न पाती। लहर इसी की इसमें खोना, देखो इस सागर में बहना। कर्ता का अभिमान करो ना, बहो समर्पित हरि में जीना।

61

जिसने प्रीति लगाई हरि से, कटे रूर यह रूके वह नहीं। किसने किसको दिया यहाँ दुख, इसका कोई भी लेख नहीं। नयना भीगे प्रीति हरी से, जग के सारे वैभव फीके। बस जाये हरि जिसके हिय में, छूटे सब बजे सुर पी के।

सत्य देख क्या है दुनिया में, बहता सब कुछ हाथ न अपने। लगा उसी से लौ मन पगले, खो जा मत जो उठते सुपने। बीज वृक्ष को लिये उपजता, सबका अपना अपना रस्ता। मैं को भूल याद कर उसको, मिटे दन्श बस यह ही रस्ता।

*याद उसे कर गिरते आंसू, तेरे दिल की पीड़ हरेंगे। विरह अग्नि घेरेगी तुझको, बादल बन वह ही बरसेंगे। गा हरि को दो दिन का मेला, कहाँ होय ना पता सबेरा। वह प्रकाश तू जला दीप को, मिट जाये सब डर का घेरा।*62

बोल न पाये पागल यह मन, नीर चढ़ाये चरणों में सुन। मैं भटकता तुम्ही सहारे, मफ करो प्रभु सारे अवगुन। ज्ञान नहीं हम बालक तेरे, आँधियारे में तुमको टेरे। ना अनाथ कर करूणाकर तू, तुमको मेरे प्राण पुकारें।

डगमग करती मेरी नौका, कहाँ उड़ा ले जाये झौंका। दीनबन्धु हो तुम्ही सहारे, कृपा करो तुम बिन सब फीका। बहते आंसू तुझे पुकारे, बन जाओ मेरे रखवाले। अनजानी इस पगडण्डी पर, पड़े पैर में मेरे छाले।

प्यार मिले जिय तुमको तरसे, नयना मेरे रिमझिम बरसे। काट सकूँ न अपने बन्धान, अबल नाथ करूणा को तरसे। खड़े नाथ हम तेरे दर पर, आस लगी करूणा कर हम पर। ठुकरा दो या प्यार करो तुम, आंसू मेरे गिरते झर झर।

63

यह नीर गिरे तुझ चरणों में, नौका यह पार हमारी हो। घुटती सांसों को चैन मिले, जब दया तुम्हारी हम पर हो। कितनी रातों में मैं रोया, दीखा न सहारा मुझे कही। जब से मेरे दिल को भाये, डर लगता बहक न जाऊँ कही।

तेरे सुमरण की गंगा में, बहता जाऊँ न रूकूँ कहीं। शक्तिमान तुम नाथ अबल मैं, जर्रे जर्रे में छिपा तुही। नमन करें हम हाथ जोड़ कर, सब दोषों को करना भंजित। तुम बसो सदा इन नयनों में, पूजा ना हो मेरी खंडित।

*तपती धारती तू ही बरसे, खेल निराले सब तेरे है। प्रीति बढ़े तुमसे यदि मोहन, मिट जाते दिल के छाले है। चरण पड़े हम विसराना ना, पार लगा नैया को देना। तेरी यादों में भूलें सब, नमन हमारा तुम ले लेना।*64

अपने बल नहीं चल सके हम, हार कर तुमको पुकारे। तुम्हारी यह रंगीन दुनिया, उलझ कर हम यहाँ हारे। कर कृपा दो जाय मिल पथ, तुम हो दयालू पीड़ हर। मेरे रचैया रो रहे हम, नहीं भुला नही दूर कर।

यह नीर मेरे चरण धोते, छिप गये कहाँ नहीं पता। इतना ना भटकाओ हमको, जाने नहीं है क्या खता? मेरे सर्जक दिल की धाड़कन, द्वार तेरे हम खड़े हैं। बहती जाती तेरी गंगा, प्यार तेरा चाहते हैं।

प्रीति तेरी में डूब जायें, कोई भी चाह ना रहे। मेरे बसो गोपाल हिय में, प्रभु नीर आंखियों से बहे। तू ही सहारा तू किनारा, तेरे बिन लगता खारा। तू बसा कण कण में प्रियतम, चाहता टूटे न धारा।

आती न पूजा ूल सूखे, कैसे समझाऊँ दिल को। तेरे इशारे पर चले सब, चैन पाऊँ दे समझ को। यह नयन रिमझिम से बरसते, लाज मेरी राख देना। मर्जी तेरी पाये जिय सुख, माँगते बल नाथ देना।

65

प्रभु जी सुनो विनती हमारी, मैं तो शरण पड़ा हूँ तेरी। अंधियारा पथ मुझे न दीखे, ज्योति जला दे मैं हूँ हारी। अगम अगोचर पार न तेरा, दया मिले तो होय सबेरा। जनम जनम की पीड़ मिटे सब, प्राण कहें प्रभु जी तू मेरा।

कदम कदम पर ूल बिखेरे, अज्ञानी मैं आंसू गेरे। मुझे बांधा ले प्रीति डोर से, मिट जायें सब दुख के घेरे। साँस साँस में तुझे पुकारूँ, तेरी लीला मैं ना जानूँ। अबल नाथ मैं शक्तिमान तुम, तेरा बालक इतना जानूँ।

*ूल बरसते इन नयनों से, तेरा नाम लिखा जब होता। नाथ तुझे भूलूँ न एक पल, वर दे कृपा करो मैं रोता। पाप पुण्य सुख दुख के मेले, मेरे मांझी पार लगा दे। इस जंगल में भटक रहा मैं, शुभ पथ चलूँ ज्ञान दर्शा दे।*66

बीते जनम नहीं मैं समझा, हरपल नीर बहाऊँ। मिलो न जब तक निर्मोही तुम, बहता इसमें जाऊँ। कितने कन्ट लगे जीवन में, नाथ तुझे ना भूलूँ। करो कृपा तुम ईश्वर मुझ पर, प्यार तुम्हारा पा लूँ।

अंखियां नीर गिराये रसिया, चाह हृदय वस जाये। पलकों में मैं तुझे बांधा लू, और न कुछ भी भाये। अगम अगोचर पार न तेरा, पता न मुझको डेरा। तुझे पुकारें हम रो रोकर, करो दूर अंधोरा।

नीर बहें मेरी यह पूजा, और न कुछ भी जानूं। मेरे देवता तुम न रूठो, सब कुछ तुमको मानूं। करूँ अर्चना हाथ जोड़कर, नीर छीन मत लेना। यादो में यह रूर करेगा, बीतेगी यह रैना।

67

तुम्हारे द्वार पर बैठे, करते इन्तजा हरदम। यही तुमसे है वर चाहे, भूले न तुम्हें प्रियतम। मेरे सर्जक न भटकाओ, बहक रहे कदम मेरे। डगमगाती नौका मेरी, अंखियां अश्रु को गेरे।

अंधियारा कुछ ना दीखे, कर प्रकाश जो सूझे। न रूठो तुम मेरे स्वामी, कैसे बता तू रीझे। ज्ञानी नहीं मैं अज्ञानी, बालक प्रभु तुम्हारा हूँ। बरस रहे आंखों से नीर, चला फिर भी हारा हूँ।

*कृपा चाहता हूँ तेरी, करूँ सांसों से ेरी। नयनों से नहीं हट पाओ, विनय करूँ यही तेरी। उड़े तुम्हारी खुशबू प्रभु, डोर तेरे हाथों में। कठपुतली ईश तुम्हारी, मिटूँ तेरी यादों में।*68

प्रभु दुखभंजक जग के पालक, रो रो कर मैं हार चुका हूँ। मेरे सर्जक मुझे न भूलो, करता विनती नाथ यही हूँ। जनम मरण का चक्र चल रहा, खिला अनखिला ूल गिर रहा। कहाँ छिपे बैठे हो मोहन, बिन तेरे यह जिया जल रहा।

याद तुझे कर नयना रोवें, किस दुनिया में प्रभु तू सोवे। नौका पार लगे ना तुम बिन, आशा तेरी दुःख मिटावे। कण्टक सारे प्रभु जी हर लो, रोते दिल में खुशियां भर दो। कितनी सुन्दर तेरी बगिया, उठे प्रीति के स्वर प्रभु वर दो।

जग सुपने ले ले कर जीता, टूटे सुपनों को ले रोता। यादों में तेरी मिट जाऊँ, चाह यही ना करो अछूता। चरण पड़ा मैं बल ना मुझमें, चल चल कर प्रभु मैं हूँ हारा। नैया मेरी डगमग डोले, नयन बसो जीवन आधाारा।

जीवन छोटा तुझे भूल कर, यहाँ हाय हम क्यों जीते है? गिरते नीर पुकारे तुमको, चलते जायें तुझ रस्ते है। पथ अनजाना काली रातें, खेवट तू ही इस नौका का। मेरे मन को तू ही भाये, बसो हृदय छूटे भय जिय का।

69

सबकी अपनी दौड़ यहाँ है, गिर गिर कर हम तुझे पुकारें। अंखियाँ नीर बहाये झर झर, किस्मत रोती तुही संवारे। किसका पकड़े साथ यहाँ पर, पकड़े छूट छूट वह जाता। तुमको पकड़े तू अदृष्य है, क्षमा करो हे भाग्य बिधााता।

बालक हम तू पार लगा दे, नैया मेरी डगमग करती। अन्धाकार अनजानी राहे, सुन लो प्रभु जी मेरी विनती। पाप पुण्य सुख दुख का मेला, तड़प रहा यह जीव अकेला। सुपने सजा सजा मुस्कावें, टूटे रोवें कर मल मैला।

*मेरे सर्जक हमें न भूलो, दास बना लो निज मन्दिर का। नयन नीर से चरणा धाोऊँ, बीते जीवन यह दो दिन का। सूखे ूल बुझा है दीपक, हृदय बसो तुम मेरे मोहन। जिय प्यास तुझ कृपा मिले प्रभु, बरसे नाचे गाये सावन।*70

चाहा जब उसने प्यार किया, चाहा जब तब ुटकार दिया। जग के सारे सुख ऐसे ही, क्यों नहीं पिया से प्यार किया। तू डूब उसी गंगा में मन, ना कहीं तुझे भटकायेगी। निर्मल होगा पावन तन मन, सब दर्द मिटे अपनायेगी।

हरिगुण गा चलता जा जग में, सब दो दिन का यह मेला है। क्या बैर किसी से रखना है, हर सांस हरी को जपना है। यह कटे फिर हरि प्रीति जगे, जग के छल रिझा नहीं पाये। बहता जाये अपनी धुान में, ना जाने कब हरि को पाये।

जो अश्रु गिरें वह ूल बने, इस तन मन को वह महकाये। उसकी बगिया में नाचे मन, हरि अन्त समय फिर वह पाये। हरि से चाहो न भूले तुझे, जग के जंगल में ना खोवें। निशदिन जपते रहें हरि को, ना भ्रम में यह मन प्रभु खोवे।

71

तुझ ओर निहारे आंखे अब, जोड़ो प्रभु तुम हमसे नाता। टूटे भी हम ऐसे टूटे, जो चला नहीं हमसे जाता। रंगीन तेरी यह दुनिया है, रोती फिर भी मेरी अंखियाँ। तुम मुझे संभालो प्रिय खेवट, यह पार लगा दो तुम नैया।

तुम सकल सृष्टि के स्वामी हो, जियरा मेरा करता धाक धाक। ज्ञानदीप को प्रज्वलित कर दो, चल पहुँच सकूँ प्रभु मैं तुम तक। ;षि मुनि ज्ञानी सब धयान करें, सब सृष्टि कर रही परिकर्मा। मेरे आंसू को प्रभु लख लो, सब क्षीण करो मेरे कर्मा।

*तेरी यादों में खो जायें, पल भर को भी ना विसरायें। सांसो की सरगम में हो तुम, बस प्रीति बढ़े बढ़ती जाये। स्वीकार करो प्रभु तुम मुझको, सर्जक हो तुम ही पालक हो। तू संग मेरे लागे हरपल, कितना ही गहरा सागर हो।*72

हरिजप हरिजप हरिजप हरिजप, बिगड़े तेरे काम बने सब। जगत नियन्ता जग का पालक, उसके बिन सूना लागे सब। नैन बसा मन मूरति उसकी, पल दो का तू कर ना गलती। उलझ उलझ कांटों में जाये, जप उसको नैया खुद बहती।

सुपनों में सब खोता जाये, रोये धीरज कौन बंधाये। सुने बांसुरी मन यह नाचे, नीर गिरें वह ूल खिलाये। कठिन डगर है लम्बा रस्ता, सुरति जगे दीपक तब जलता। शान्ति न उसके बिन मन पागल, बन परवाना दीपक जलता।

बहे जगत जाने रखबाला, पिये जा रहा दुख का प्याला। क्या तेरे हाथों में पागल, अर्पण कर हरि होय उजाला। अपना कोई नहीं पराया, माया ने सबको भरमाया। ंसा जाल में रोवे मनुआ, जप उसको मिलता है साया।

उठती लहर यहां गिर जाती, जतन करो पर संभल न पाती। सब उसका यह खेल चल रहा, जान लहर बन समझो पाती। अगम अगोचर पार न उसका, दीप जले नाचे मन अपना। नाच गीत गा मन तू पागल, बीत रहा यह सारा सुपना।

73

मेरी नौका पार लगा दे, मुझे प्यार का तू वर दे दे। चला थका हारा मैं ठाकुर, पथ तेरे चल आऊँ बल दे। झिलमिल झिलमिल करती दुनिया, क्यों होता मेरा मन दुखिया। तेरा प्यार मिले यदि मुझको, जनम सफल हो जाये सैया।

सर्जक तुम मैं दास तुम्हारा, तेरा ढूंढू नाथ सहारा। खा नहीं तुम मुझ से होना, भटकू इस जग में मैं हारा। ज्ञानी तुम अज्ञानी मैं हूँ, ना कसूर मैं अपना जाना। ज्योति जला दो मेरे मन में, तम हट जाये होय उजाला।

*पाप पुण्य सुख दुख का खेला, उलझ उलझ गिरता मैं छैला। मेरे दाता झोली खाली, करो नहीं मेरा मन मैला। सोऊँ तब सुपनों में आओ, मेरी सांसों में रम जाओ। बसी रहे नैनन में मूरति, विनय यही बस प्रीति जगाओ।*74

कुछ समय की रात बाकी, बीत जायेगी घड़ी। नयन हरि से मन लगा ले, धान्य हिय मूरति जड़ी। आ गये जाना वहाँ है, खेल थोड़ा सा यहाँ। मन उलझ न भूल उसको, मिट रहा सब कुछ यहाँ।

दर्द ले कर चल रहे हैं, नीर अंखियों से बहें। तू नहीं हमको सुने यदि, तो बता किससे कहें? कौन सा बन्धान लिये हैं, तोड़ जो पाते नहीं। इस अंधोरी रात में प्रभु, कर उजाला ओ मही।

देव तुम रूठो नहीं अब, कर रहे हम अर्चना। सृष्टि के हो नाथ स्वामी, अब मिटा दो सुलगना। झूमती चलती हवा है, कूकती कोयल यहाँ। तुम बिना अच्छा न लगता, डगमगाते पग यहाँ।

चलते है गिर जायेंगे, भूलना हमको नहीं। प्यार तेरा चाहते है, छोड़ कर छिपना नहीं। प्यार की तू भीख दे दे, चाह नयनों में रमें। मेरे सर्जक दास तेरे, कर दया पथ दे हमें।

75

पगले निज मन ना समझाये, रोये धीरज कौन बंधाये? खोजें किसको इस जंगल में, मनुआ यह उड़ता ही जायें। करी शिकायत तू ना छाया, जग के मेले में भरमाया। नहीं रूकेगी बहती लहरें, खिलकर ूल यहाँ कुम्हलाया।

ना अपना कुछ खेल चल रहा, नाच लहर पर सभी बह रहा। दो दिन का यह मेला जग में, छूट रहे सब काहे रो रहा। प्रीति चाह तू प्रीति संजोले, हरि सुमरण कर जग में बह ले। मर्जी उसकी आना जाना, समझ बाबले उसको जप ले।

*हरि हरि कहते बीते जीवन, तन मन सब कुछ हो फिर पावन। गुजरेगी थोड़ी सी बाकी, समझो खिल जायेगा उपवन। अन्तस हरि का दीप जला ले, नैनन में मन उसे बसा ले। चलता जा जग के मेले में, भय सब छोड़ उसे अपना ले।*76

तुमसे विनती नाथ करूँ मैं, कभी नहीं तू मुझसे रूठे। प्राण विसर्जित हो हरि कहते, बने रहो प्रभु जी तुम मीठे। दास तुम्हारा सुधिा को ले लो, दन्श लगे जो उनको हर लो। नीर बहाये आँखिया मेरी , क्षमा मुझे कर उनको लख लो।

तुझे पुकारूँ भटक रहा मैं, अपनी मंजिल मैं ना जानूं। दीप जला अज्ञान हरो प्रभु, सदा साथ मेरे यह जानूं। कितने रंग बिखेरे जग में, प्यास मिटे ना हम सब जल में। तेरा विरह सदा सुख देता, बढ़ा विरह को मेरे तन में।

जीवन दाता मेरे पालक, नाथ हुआ हूँ मैं भिखमंगा। तुझे भूलकर ठोकर खाऊँ, कृपा करो यह मन हो चंगा। नयनों में हो तेरी मूरति, सांस सांस हो तुझे समर्पित। सहज बहा अपनी लहरों में, प्रीति रंग में होऊ विसर्जित।

77

जगपालक प्रभु दुख के नाशक, याद तुझे कर मन सुख पाये। सुमरण कर कट जाये संकट, करो भजन मन जीवन जाये। पथ न और तू क्यों दुख पाये, जियरा उस बिन ना हर्षाये। कन्ट लगे पथ में इस जग में, नाम उसी का शान्ति दिलाये।

डूब उसी में पी अमृत को, याद उसे कर मन सुख पाये। राम पकड़ बीते ऊसाना, जीवन नदिया बहती जाये। प्रीति बढे भय सारे छूटें, नीर गिरें हिय को सुख देवें। मिले भक्ति वर हरिकृपा से, विनय करो हरि प्रीति बढ़ावें।

*नयना हरि मूरति बस जाये, साँस सदा ही उसे बुलाये। सागर में नाचें सब लहरें, सब भूले हम वह ही गाये। मनुआ प्रेम करो बस हरि से, उसका जीवन वह ही जाने। जग में उलझा बना विवश तू, बढ़ा प्रीति ना रो दीवाने।*78

पिय बिन बता हँसे कैसे हम, जीवन के गीत रचूँ कैसे? तड़ रहा हिय तुम बिन ऐसे, जल बिन तड़े मछली जैसे। झरते आंसू को तुम देखो, नाथ शरण में अब तुम रख लो। ठोकर पर ठोकर खा गिरता, प्रीति बढ़ा कर तुम अपना लो।

कुछ भी ज्ञान नहीं है हमको, भटक रहे हम इस जंगल में। मेरे देवता तुम न रूठो, दीप जला दो इन नयनों में। अज्ञानी हूँ बालक तेरा, कैसे इसको झुठलाओगे? खुश हो लें दो चार घड़ी हम, मेघ नहीं क्या बरसाओगे?

बिना प्रीति के चैन नहीं है, इसको मेरे दिल में भर दो। टूटें सब कर्मों की बेड़ी, अपने अंचल में छिपने दो। शान्ति सुधाा को तुम वर्षा दो, मेरे उपवन में ूल खिलें। दो दिन के इस जीवन को जी, प्रभु प्रेम भरा हो तुझे मिले।

79

सुपने बसन्त के नयनों में, पतझड़ मुझ पर हँसता आया। जी सके नहीं मर सके नहीं, पीड़ा का सागर लहराया। लहरे उठती फिर गिर जाती, कैसी विचित्र है यह दुनिया। जा रहे ठगे मेले में हम, ना जान सके मंजिल है क्या?

दो बून्द गिराती यह अंखिया, अम्बर भी यह चुप रह जाता। सब टूट रहे जग के रिस्ते, ना जोड़ सके हरि से नाता। कैसे इस दिल को समझाये, सुनसान अंधोरी रातों में। बिन कृपा मिले ना पथ हमको, हरि दीप जला मेरे घट में।

तेरी रहमत का प्यासा जग, दो बूंद पिला कुछ कमी नहीं। तन मन यह सारा पावन हो, तुम बिन हमको ना ठौर कहीं। तेरे गुण गायें कटे रूर, अन्तिम बस नाम तुम्हारा हो। लेना संभाल हरि तुम हमको, इस सकल सृष्टि के स्वामी हो। 80

जगपालक वह दुख का नाशक, मनुआ हरि का भजन करो। पीड़ा दिल की वही मिटावे, उससे ही बस प्रेम करो। नयन बसा ले उसकी मूरति, सुगम होय राहें टेढ़ी। राम बसे नाचे यह मनुआ, टूटे कर्मो की बेढ़ी।

सभी अंधोरा छट जायेगा, जुड़ जाये हरि से नाता। हृदय कमल भी खिल जायेगा, दूधा पिलाती यह माता। बिन हरि चैन नहीं है मनुआ, कितना चाहे जतन करो। अलग यहाँ पर इच्छाये, सभी भूल कर भजन करो।

बहती जाती है यह नदिया, जलधा बीच मिल जायेगी। साँसों में यदि हरि बस जाये, पीड़ सभी मिट जायेगी। दो दिन का मेला है जग में, छोड़ सभी कुछ जाना है। जप ले हरि को छोड़ शिकायत, पगले वही ठिकाना है।

81

जाये प्रतिपल रूदन बिखरता, नीर ढुलकते नयनो से। क्या अपराधा हुआ है मुझसे, पूछ रहा हूँ प्रभु तुमसे। तुम हो सर्जक ज्ञात दिशा ना, भटक रहे इस जंगल में। अनजान यहाँ प्रभु कृपा करो, दीप जला दो इस घट में।

शक्तिमान तुम अबल नाथ हम, सकल सृष्टि के स्वामी हो। दुख के इस बहते सागर में, नाथ तुम्ही तो तारक हो। शीश झुकाये करें अर्चना, नाथ हमारी सुधिा को लो। जियरा मेरा कांप रहा है, प्रीति बढ़ा कर अपना लो।

आंधियारी रातों में प्रभु जी, तू ही एक सहारा है। लगे सुरतिया तुम में प्रभु जी, मन शीतल हो जाता है। विरह बढ़ाओं प्रभु जी अपना, तुम बिन हम ना रह पाये। मृगमरीचिका से प्रभु बचकर, चरणों की रज को पाये।

82

*जीवन सारा बीता जाता, चैन मिला ना जी भर रोया। दुनिया हरपल रंग बदलती, नये नये सुपनों में खोया। जहाँ ठहर जायें यह आँखे, मोहनी मू
सारे इस जग के, मुझे प्रीति में नाथ डुबो दे।*

*मेरे देवता छिपे हो क्यों, देखो इन झरती आँखो को। जनम जनम से भटक रहे है, दया करो दे दो आंचल को। प्यार मिले मन नाचे गाये, नीर
पल के इस जीवन में, संग तुम्ही यह भान न जाये।*

*अज्ञानी हूं भटक रहा हूँ, तुम सा ना कोई भी ज्ञानी। फिर भी मेरी झोली खाली, प्यासा हूँ तू दे दे पानी। तुझे पुकारूँ मैं रो रो कर, करूँ अर्चना
हिचकोले यह नौका, सुने ले बस इतना ही जानूं।*

83

*वसो हृदय मेरे तुम स्वामी, मेरी बात को सुन लो नाथ। ज्ञानी अज्ञानी रंक राजा, सब ही नवावें तुमको माथ। अबल यहाँ सब सूना लागे, नीर बह
प्रभु नहीं विसारो, विरह बढ़े बढ़ता ही जावे।*

*सांस सांस में जपें तुझे हम, मेरी नौका पार लगा दे। जग के आंगन में भटक रहे, उलझ गिरूँ पथ को दर्शा दे। कर्मों की जंजीर में उलझा, चा
मिले प्यार तुम्हारा, संकट कट जाये जीवन का।*

*करें वन्दना हाथ जोड़ कर, पाप पुण्य सब तेरी रचना। दुष्कर्मों से हमें बचाओ, मिले प्यार तुम्हारा सजना। सूख गई सरिता जीवन की, मिले दया
तेरा धयान धारें हम, करूँ विनय ना हमें भुलावे।*

84

*तुम करो वह ठीक होगा, मैं करूँ वह गलत है। राजी तुझी से हो सकूँ, तम मिटा हम अबल हैं। ढूंढ़ते फिरते हैं
मन्जिल, हाथ यह आती नहीं। नीर दिखलायें किसे हम, छिप गये तुम भी कहीं।*

*प्यार तेरा चाहते है, भूल ना नाविक मुझे। डगमगाती नाथ नौका, दीखता ना मग मुझे। पार करो मेरी नौका, गुनगुनायें
गीत को। यह कटे सारा सफर फिर, पा सकें तुझ प्रीति को।*

*तू अनन्त, अनन्त पथ है, सहारे को चाहते। एक पल को भी न भूले, वर हमें दे मांगते। नमन को स्वीकार कर लो,
बस हमारा कुछ नहीं। देख लो नैना उठाकर, जी भरे फिर गम नहीं।*

85

*दिल तो नहीं लगता यहाँ, सुन लो मेरी विनती। कितने गिरे आँसू यहाँ, ना इनकी है गिनती। देव तुम सर्वज्ञ मेरे, तुम
ही मेरे भर्ता। बसन्त रूठा क्यों बता, चरणों में हूँ पड़ता।*

डोलता मझधार में मैं, किनारा ना दीखता। मुझको नहीं इतना रूला, तू क्यों ना पसीजता। चाहता हूँ प्यार बस मैं, दु:ख सारे फिर कटे। अनजान यह डगर मेरी, तम यहाँ सारा मिटे।

*यह नीर मेरे बह रहे, तू दयालू देख ले। सिर झुकाये हम खड़े हैं, मुख नहीं तू फेर ले। अबल हम तुम शक्तिशाली, तुम्हे पाये पथ दे। याद में खोयें तुम्हारी, चाहते यही वर दे।*86

तुझ कृपा से चल रहे हम, प्रभु लाज मेरी राखना। दास हम है तुम हो स्वामी, नाथ तुम ही सम्भालना। यह दुनिया भागी जाती, ना पता कहाँ जायेगी? आ रही है याद तेरी, चाहूँ बढ़ती जायेगी।

पार करो मेरी नौका, तुम खिवैया हम पुकारे। कांपती मझधार में है, करो दया तू ही तारे। स्वप्न बनते टूटते हैं, रंग कितने ही बिखेरे। रंग अपने रंग में तू, मिट जाये जी के घेरे।

दर्द कितना है छलकता, कौन जो नयना निहारे। जी नहीं लगता यहाँ पर, आ मिलो तुम प्राण प्यारे। कौन सा यह खेल चलता, हम तो भटकते फिर रहे। देख लो नयना उठा कर, यह प्राण तो प्यासे रहे।

नाचती यह सृष्टि सारी, तू खिलाता खेल छलिया। विमुख हो दुख पा रहे हैं, दे हमे पथ मिले सैया। जिय के जीवन तुम्ही हो, दूर क्यों मुझसे हुए हो। जाये रम दिल तुम्हीं में, तम मिटे सभी तुम्ही हो।

*डगर है अनजान मेरी, ना पता कहाँ जायेगी? कंठ प्यासे हैं तड़पते, प्यास तू ही मिटायेगी। नयनन बस जाओ मेरे, तुम करो उपकार इतना। सृष्टि के तुम हो रचैया, हिय बसो फिर डर लगे ना।*87

मन जिसको सुनकर तू रीझे, कौन गीत मैं गाऊँ? अनजानी जग की पगडण्डी, चाहूँ फूल खिलाऊँ। सागर की लहरें हैं हम तो, तज अभिमान न पाऊँ। छोड़ बहे सागर संग मन तू, पुलकित हो हर्षाऊँ।

कहाँ जायें न कोई मंजिल, सागर संग लहराऊँ। उठे लहर खो जाये इसमें, समझ नहीं क्यों पाऊँ? मृगमरीचिका छोड़ बाबरे, सागर ही तब पाऊँ। उठती गिरती लहर खेलती, खेले तरता जाऊँ।

पीड़ित मन की पीड़ा लेकर, लिये जख्म दुख पाऊँ। सब घट रहता वह ही भीतर, जान मुक्ति को पाऊँ। बहता सागर सब कुछ सागर, समझू ना दुख पाऊँ। लहर जुड़े सागर के संग जब, मिटे दंश सुख पाऊँ।

88

चुप तुम रहो ना, कहो हमसे। कटता फर ना, रूठ हमसे। आँसू रहे गिर, खोये यहाँ। निष्ठुर बनो ना, सूना जहाँ।

कटती ना रैना, ना सहारा। क्यो छिप गये हो, दे सहारा। पूजूँ तुझे मैं, हिय बसाऊँ। मेरी विनय है, तुझे पाऊँ।

*बरसते नैना, खोजें तुझे। सब कुछ तुही है, प्यारा मुझे। कर पार नौका, चल न पाता। कठिन रास्ता है, तुही भ्राता।*89

मुझे अपनी शरण में लो, ना परीक्षा और लो। थक गया तुमको पुकारूँ, नीर बहते देख लो। धुन सुना वंशी की प्रियतम, भूलूँ जग के दुखड़े। अबल मैं प्रभु तुम सबल हो, तुम बिन रोते जिवड़े।

चलता मर्जी तुम्हारी, मन हुआ बेचैन क्यों? कर कृपा हूँ शरण तेरी, लग रहे है दन्श क्यों? कूल आते यहाँ मग में, ना पकड़ पाया कभी। सदा बहती जिन्दगी यह, मिल बिछुड़ते हैं सभी।

डूब मन अन्तस में अपने, कर नमन इस सृष्टि को। प्राण अकुलावें यहाँ जब, जप उसी अज्ञात को। नाथ को भूलें नहीं हम, सदा ही सुमरण करें। वही है सर्जक हमारा, पार बस वह ही करें।

90

सुर उठा सके ना हम, बढ़ती जाती धाड़कन। दीखे ना लागे डर, तुम कृपा करो मोहन। ले हवा किधार जाये, बस नीर नयन आये। छलिया बन कर ठग ना, दे मग तुमको पाये।

बंशी के स्वर सुन कर, नाचे मेरा तन मन। वह राह बता दे तू, यह होय सफल जीवन। प्यासे की प्यास बुझा, तू प्रेम सुधाा बरसा। खोये ना मेले में, जिय तुम बिन है तरसा।

*तेरे गीतों को गा, यह कटे सफर सारा। संताप हरो सबके, सबका सृजन हारा। तुम नाथ खिवैया, खे दे मेरी नौका। पतवार हाथ तेरे, खोना मत अब मौका।*91

अखियाँ गिराये आँसू, अनजान सब गलियाँ। तुमको पुकार रहे हम, पांव पड़ते सैयां। गुजारते हंस रो कर, वासना में खेलें। दुख झेले बहुत हमने, फिरते हम अकेले।

तुममें न रम सके हम, हाय विलग हुए है। किस्मत नचाती हमको, नाचे जा रहे हैं। तू प्यार दे दे अपना, तुमको मैं निहारूँ। कुछ पल रहे हैं बाकी, जीवन यह संवारूँ।

थक हम गये है सर्जक, जाने कहाँ गिरेगे? ढलती जाती संधया, प्यार हम चाहेंगे। कांटो से तुम बचाना, न भूल हमको जाना। जग के हो तुम रचैया, नौका पार करना।

92

उठें कैसे गीत तुम्हारे, लगन लगे तुझमें खो जाऊँ। जन्मों से मैं भटक रहा हूँ, पग पग पर मैं ठोकर खाऊँ। दाता तुम सबके रखबाले, अंखियां रोवें ओ मतबाले। जन्म मरण का चक्र चल रहा, मुझे पिलाओ प्रेम प्याले।

ऊसर जमीं सुमन ना उपजे, सावन सारा बीता जावे। मेरे देवता तुम ना रूठो, जियरा मेरा भर भर आवे। अनजाना पथ करूँ प्रतीक्षा, दे दो हमें प्यार की भिक्षा। निर्बल हम हे जग के स्वामी, दीप जले मिल जाये दीक्षा।

पाप पुण्य सुख दुख का मेला, जियरा भटके फिरे अकेला। नीर बहें नयनो से मेरे, कृपा होय सब मिटे झमेला। दास तुम्हारा जग नियन्ता, इन प्राणों में तू ही बहता। प्यारा लगे विरह तुम्हारा, मिंटू इसी में यह वर देना।

93

किसे सुनायें हम यहाँ, सुनने को कौन है? बहते नीर यह मेरे, दिल तो बेचैन है। आये जहाँ में तेरे, चाहा था सुख मिले। गिरे उलझ कर रो उठे, दयालू न तुम मिले।

स्वीकारो नमन मेरा, मालिक संसार के। प्यासा हूँ मैं जल पिला, स्वर उठें प्यार के। अंधियारा है डर लगे, मिले नहीं किनारा। तुझे पुकारे प्राण यह, तू मेरा सहारा।

कैसे रिझाये न पता, तुम ही मेरे सखा। नयनों से जल बह रहा, दया कर डगर दिखा। शक्तिमान तुम अबल हम, तुझ में जग नाचता। आशा मेरी ईश तू, हर लो अज्ञानता।

सर्जक मेरे नाथ हो, तुम रूठ न जाना। अनजान हूँ भटक रहा, अपनी कृपा रखना। चाहें प्यार हम तेरा, आँख मेरी झरती। चरण में बन सुमन गिरे, मेरी यही विनती।

94

जीत होगी हार होगी, यह नहीं कुछ भी पता। बह रही यह जिन्दगी बस, लुप्त कब हो ना पता। मन शिकवा न कर किसी से, गिर कर भी सम्भलना। जा रहे सारे बिछुड़ ही, कुछ समय का खेलना।

प्यार से सबको निहारो, खेल यह चलता रहे। छूट जायें सांस यह कब, न कोई फिर गम रहे। चल रही मर्जी उसी की, भूल मैं में ंस गया। जो मिला अभिनय करें हम, सूत्र यह क्यों खो गया।

जानना कुछ भी न पागल, मैं मिटा बस लहर तू। नाच ले सागर नचाता, इस नियति के हाथ तू। मन मैं समझाऊँ पागल, यह न फिर भी मानता। बहे जा तू लहर बन कर, नीर को क्यों ढालता।आँख सबकी तुम निहारो, दर्द ले सब फिर रहे। अनगिनत काँटे यहाँ पर, ूल फिर भी खिल रहे। जो मिली साँसे जगत में, खूब जी भर देख ले। पकड़ मत कर दूर जाता, नीर अपने पोंछ ले।

95

तू ना आये राम पुकारूँ, हाय परीक्षा सही न जाये। कैसे पूँजूँ मेरे भगवन, अंखियाँ रोयें तू घर आये। नाचे सावन कोयल गावे, पतझड़ सा हूँ कुछ ना भावे। मेरे देवता तुम न रूठो, तुम ही सर्जक नीर बहावें।

चरणों में मैं गिरा मुसाफिर, नहीं ठिकाना ले चल नैया। तरसे तेरे प्यार की खातिर, आनी जानी सारी दुनियां। नमन करें कुछ भी ना जाने, गीत रो रहे जगत मही है। तुझे पुकारें रो रो कर बस, अपना लो स्वर कंठ नहीं है।

कैसे दिन गुजरेगे मनुआ, सही न जाती काली रैना। सुनो सुनो ना मर्जी तेरी, चाहूँ तुझ मन्दिर का कोना। न कोई मेरा ना किसी का, पागल बना जगत में घूँमू। बहती इन आंखों से गंगा, अपना ले चरणों को चूंमू।

96

कौन सुनता है किसी की, रोते निज सुख की खातिर। कर समर्पित ईश को मन, पोंछ आंसू हो न कातर। बह रही नदिया किनारा, जानता न कहाँ पर। बन लहर मन नाच ले तू, नियति का खेला यहाँ पर।

उठ रही लहरें अनेको, लुप्त इसमें हो रही है। जान ले तू बस लहर है, और तो कुछ भी नहीं हैं। कर न तू अभिमान पागल, गिर रहे पर्दे सभी है। तू हटा मैं को यहाँ पर, देख ले फिर सब वही है।

लौ लगा ले ईश से मन, कट यह रस्ता जायेगा। पीड़ जो ऊने यहाँ पर, वही सुधाा बरसायेगा। दिल में बसा वही सर्जक, इन अंखियों का है तारा। नैन में छवि को बसा ले, दे रहा तुझको सहारा।

97

अपने दामन को प्रभु दे दे, घूम रहे अनजानी गलियाँ। नीर नयन से मेरे बहता, प्यार हमें दे अपना सैंया। करो कृपा सुर नर मुनि सब चाहें, पथ ना दीखे नीर बहाये। मेरे देवता तुम ना रूठो, जोड़ हाथ हम तुझे मनाये।

सकल सृष्टि के तुम हो मालिक, नौका मेरी खे दे खेवट। पूजा की विधिा को ना जानू, आती जाती संधया सरपट। कितने रूपों में तुम आये, ना पहचाना आँसू आये। जगत पिता हो जग के सर्जक, क्या कसूर जो हमें रूलाये।

गूंज रहे स्वर इस आंगन में, पीड़ा की गठरी ले चलते। सुना बांसुरी मन को भाये, रिमझिम रिमझिम नयन बरसते। दुर्लभ दर्शन प्रभु तुम्हारा, बिन तेरे हिय चैन न आये। पूजा की रीती थाली है, तुझे पुकारूँ तू मन भाये।

जगत नियन्ता जग के पालक, दुनिया सुख दुख का है मेला। करो कृपा चरणों को पायें, कैसे समझूं फिरूँ अकेला। ठोकर खाता गिर गिर पड़ता, दामन तेरा पकड़ न पाता। डगमग मेरी नौका कांपे, जला दीप को भाग्य विधाता।

नयन बसो यह पथ कट जाये, बता किसे हम और बुलाये। अज्ञानी तेरा बालक हूँ, मिले चरण रज दुख मिट जाये।

98

गलत सही कुछ जान न पाये, जो होता मर्जी तेरी। मनुआ पागल समझ न पाता, तुम करो कृपा न कर देरी। शीश धारूँ ना ठुकराओ प्रभु, ज्ञानदीप प्रज्वलित कर दो। दो नयनों को प्रभु भीगे जो, तुम बढ़ा प्यार हर्षित कर दो।

अज्ञानी हम ढूंढ रहे पथ, ठोकर खाकर गिर जाते है। खोई खोई अखियों को ले, नाथ संभल ना हम पाते है। कंठ है सूखा कैसे बोलूँ, हाय विधाता तू क्यों रूठा। मेरे सर्जक मेरे खेवट, पार लगा दे मेरी नौका।

अंसुवन की बहती धारा से, अपने पग को धो लेने दे। सफल होय मेरा यह जीवन, मैं रोता कुछ कह लेने दे। तुमको पाऊँ सब बिसरा कर, लीन होय तन मन यह सारा। सृष्टि नियन्ता देखो मुझको, थका हुआ टूटा मैं हारा।

99

थक गये हम चलते चलते, न पता कहाँ जायेंगे? आँसू से पूरित नयन हैं, तुझ कृपा को चाहेगे। बीतती जाती है बेला, तुम बिना न चैन आये। नयन में बस जाओ मोहन, जिय तुम बिन डगमगाये।

करो दया होवे सबेरा, जग में प्रभु राज्य तेरा। कंठ तेरे ही गीत गायें, सुन विनय चल मैं हारा। तुमको भूला रो रहा हूँ, जग के पालक रचैया। दम निकल जाये न मेरा, उलझ जग में कन्हैया।

चाह नहीं मिटती यहाँ है, शाम ढलती जा रही है। सांस में रम जाओ मोहन, ज्ञान जीवन का तुही है। आंसू को स्वीकार कर लो, नहीं छिपो तुम नियन्ता। अज्ञान में रिते हैं हम, कृपा हो दीप जलता।

100

हरि हरि जपो न भूलो मनुआ, मेला यह सब दो दिन का। पार लगे ना उस बिना नौका, चल हारा हूँ मैं अटका। मिले कृपा पथ तब मिल जाये, अज्ञानी मैं जन्मों का। गाते गाते गुण तेरे प्रभु, तन छूटे रि ना खटका।

कैसे पाऊँ रोऊँ पल पल, बाट निहारूँ तू अब आ। बीत रही जीवन की संधया, हरि हिय बस जा अब तो आ। तन मन निर्मल हो सब पावन, दीप जले प्रभु जी तेरा। अनजाना पथ मुझे डराये, तुम बिन ना कोई मेरा।

*जग के रखवाले तुम मोहन, जानूँ ना कुछ अज्ञानी। मुझको जीवन देने बाले, प्यास बुझा तू दे पानी। जग में डोले मन तू पागल, कांपे हरपल तू रोता। बीतेगी यह काली रैना, लागे ना डर जो जपता।*101

तुमको हरि मैं कैसे पाऊँ, चलन करत हरि चल ना पाऊँ। अन्तर्यामी भाग्य विधाता, करो कृपा तुझ चरणा पाऊँ। अखियां बरसे छतिया धाड़के, जल में रह क्यों जल को तरसे? अपरम्पार तुम्हारी लीला, चाहूँ प्यार तुम्हारा बरसे।

मेरे खेवट मुझे संभालो, डगमग करती मेरी नैया। पार लगा दो भवसागर से, चरण पड़ा तेरे कन्हैया। जीवनदाता पालक मेरे, छिपे कहाँ ना मिटते तेरे। गूंज रहा स्वर जग में तेरा, कान हुए क्यों रि भी बहरें।

प्यार बढा दो खोऊँ तुझमें, नैन बसो ना आंखे खोलूँ। मिटे सकल मेरी अभिलाषा, सांस सांस में तुमको जप लूं। सागर में उठती लहरे हैं, दीख रहा न कोई किनारा। नहीं लहर का अपना कुछ भी , रि भी नीर बहाये खारा।

102

करूँ मैं अर्चना तेरी, बहे नयनों से है पानी। प्यासा हूँ पिला पानी, नहीं तुमसे बड़ा दानी। अज्ञानी मेरे मालिक, लगा दो पार यह नैया। तुही खेवट हमारा है, चाहें हम तेरी छैंया।

नहीं कुछ दीखता हैं प्रभु, अंधोरा सब तरु छाया। खिलाता भाग्य खेला है, जाने ना तेरी माया। गीतों को तेरे गाऊँ, जला दो ज्ञान का दीपक। निहारें पथ नयन तेरा, करो भव पार तुम मालिक।

तुही रक्षक हमारा है, तुही निर्बल सहारा है। तुमको पाऊँ में कैसे, बहती अश्रु धाारा है। विरह की आग में जलकर, मिट जाऊँ मेरे स्वामी। यह आग तू मालिक, लगे प्यारी हमें स्वामी।